# LITERATURE IN HINDI

Study material

COMMON COURSE IN HINDI

For

**SECOND SEMESTER B.COM.**

# UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

**CALICUT UNIVERSITY P.O. MALAPPURAM, KERALA, INDIA - 673 635**

**116**

# UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Study material

COMMON COURSE (HINDI)

For II SEMESTER B.COM.

## *LITERATURE IN HINDI*

Prepared by DR. V.K.SUBRAMANIAN,
ASSISTANT PROFESSOR,
DEPARTMENT OF HINDI,
UNIVERSITY OF CALICUT

Edited & /scrutinised by : DR.PAVOOR SASHEENDRAN (RETD.),
38/1294, APPUGHAR,
EDAKKAD P.O., CALICUT.

©
Reserved

# निबन्ध

# मेरा विद्यार्थी-काल

**लेखक परचय**

**गाँधिजी भारत के राष्ट्रपिता हैं। वे बारिस्ट्री पढ़कर नौकरी के लिए दक्षिण आफ्रिका गए और बापस आकर आज़ादी की लड़ाई के लिए नेतृत्व किया। उनकी आत्मकथा का अंश है यह लेख। इसमें वे विद्यार्थियों के लिए सत्य, अहिंसा आदि का पाठ देते हैं। साथ ही स्वस्थ्य, सुन्दर अक्षरों में लिखने की आवश्यकता, संस्कृत भाषा का महत्व आदि के बारे में कहते हैं।**

**सारांश**

**गान्धीजी कहते हैं कि पढ़ाई में मैं बेवकूफ नहीं था। उस ज़माने में स्कूलों से छात्रों के चरित्र, पढ़ाई आदि के सम्बन्ध में सर्टिफिकेट घर को भेजा करता था। मेरे बारे में कोई आपत्ति ऐसे पत्रों में नहीं थी। पाँचवीं और छठवीं क्लास में पढ़ते समय मुझे स्कॉलर्शिप मिला था। इसे मैं ईश्वर की कृपा मानता था। पुरस्कार व स्कॉलर्शिप मिलते समय मुझे संतोष होता था।**

**मेरे चरित्र पर मुझे बड़ा ध्यान था। मेरे बारे में किसी अध्यापक को कोई आपत्ति होती तो मुझे बड़ा दुःख होता। मुझे एक दो बार स्कूल में मार मिला था। मैं मार की वेदना से ऊपर दन्ड पर दुखी था। उस पर मैं खूब रोया था। हमारे हेडमास्टर श्री. दोरावजी एदलजी गीमी थे। वे छात्रों से प्यार करते थे, अच्छी तरह पढ़ाते थे, लेकिन अनुशासन पर कड़े थे। वे छात्रों को व्यायाम अवश्य मानते थे। मैं व्यायाम करने नहीं जाता था। मुझे व्यायाम से दूर रहने के कारण कोई दुःख नहीं था। क्योंकि मैं हर रोज़ ज़्यादा पैदल जाता था। स्कूल से आकर पिताजी की सेवा करता था। व्यायाम से मैंने छूट माँगा था लेकिन हेडमास्टर ने नहीं माना।**

**वह शनिवार का दिन था। दोपहर तक क्लास था। शाम को व्यायाम भी था। आकाश बादल से आवृत था। मेरे पास घड़ी नहीं थी। समय के बारे में कोई पता नहीं था। व्यायाम के लिए स्कूल पहूँचने में देरी हुई। अगले दिन हेडमास्टर ने रजिस्टर देखा तो मैं पकड़ा गया। उनके पूछने पर मैं ने वास्तविक कारण कहा। उन्होंने विश्वास नहीं किया। इसपर मुझे जुर्माना हो गया। मुझे दुःख जुर्माने पर नहीं था बल्कि हेटमास्टर ने मुझे झूठा समझा था, दुख उस पर हुआ था। व्यायाम के बदले मैं ने पैदल जाना ज़ारी रखा।**

**मुझे सुलेख नहीं आया था। मैं ने सोचा था कि शिक्षा के लिए सुलेख अनिवार्य नहीं है। लेकिन जब मैं दक्षिण आफ्रिका गया वहाँ वकीलों का सुलेख देखकर मैं स्वयं शर्मा गया। मेरा मत है कि छात्रों को सुलेख आने के लिए चित्रकला सीखनी चाहिए।**

**संस्कृत भाषा मुझे पचती नहीं थी। लेकिन फारसी मेरे वश में आयी थी। उस्ताद भला था। वे एक दिन ज़्यादा नहीं पढ़ाते थे। मैं ने संस्कृत को छोड़ा। एक दिन संस्कृत का मास्टर कृष्ण शंकर ने मुझे उपदेश दिया कि संस्कृत पढ़े। मैं ने माना। आज मैं कृष्णशंकर मास्टर से कृपावान हूँ जिन्होंने संस्कृत पढ़ने और उसके साहित्य का आस्वादन करने की प्रेरणा दी।**

**छह साल की उम्र से लेकर सोलह साल की उम्र तक स्कूल में शिक्षा मिली। लेकिन नैतिक व धार्मिक शिक्षा नहीं मिली। मेरी राय में उसकी आवश्यकता है। नैतिकता का पाठ मुझे दाई से मिली। उन्होंने मुझे**

**भूत- प्रेत के डर से मुक्ति के लिए राम- नाम का जप करने को कहा। बच्चे सही रास्ते पर चलने के लिए नैतिक शिक्षा अनिवार्य है।**

**प्रश्न और उत्तर**

1. **मेरा विद्यार्थी जीवन किसकी आत्मकथा का अंश है?**
- **गान्धी जी की।**
2. **व्यायाम के स्थान पर गान्धी जी क्या करते थे?**
- **पैदल चलते थे।**
3. **सुलेख पर गान्धी जी की राय क्या है?**
- **पहले वे सुलेख को अच्छी शिक्षा के लिए आवश्यक नहीं मानते थे। लेकिन जब उन्होंने दक्षिण आफ्रिका के वकीलों का सुलेख देखा तो उन्होंने अपना मत बदल दिया। बच्चों को सुलेख सिखाने के लिए चित्रकला सिखाने के वे पक्ष में थे।**
4. **व्यायाम में अनुपस्थित रहने से हेडमास्टर ने गान्धी जी को कौन-सी सज़ा दी?**
- **जुर्माना डाला।**
5. **दन्ड पर क्यों वे दुःखी हुए?**
- **हेडमास्टर ने उनकी वास्तविक बात पर विश्वास नहीं किया। उन्हें दुःख, दन्ड मिलने से नहीं हुआ बल्कि झूठा सोचने पर हुआ।**
6. **कृष्णशंकर मास्टर कौन था?**
- **संस्कृत के अध्यापक थे। उन्होंने गान्धी जी को संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दी।**
7. **शिक्षा में वे क्या अनिवार्य मानते हैं?**
- **नैतिक व धर्म की शिक्षा अनिवार्य मानते थे।**
8. **गाँधी जी को नैतिक शिक्षा किसने दी?**
- **उनकी दाई ने दी।**
9. **दाई का नाम क्या है?**
- **दाई का नाम रंभा था**

**कठिन शब्दों का अर्थ**

**विद्यार्थी- काल -** Student's period

**छात्रवृत्ति -** scholarship

**लाजिमी -** compulsory

**झेंपूपन -** shy

**गैर- हाज़िर -** absent

**जुर्माना -** a fine, penalty

**मसोसकर रहना -** to suppress

**सुलेख -** good handwriting

**आलेखन- कला -** graphic art

**रेखागणित -** geometry

**रटना -** to repeat

**प्रतिस्पर्धा -** competition

**दाई -** grand mother

**उदासीन -** disinterested

# युवकों का समाज में स्थान

**लेखक परिचय**

आचार्य नरेन्द्र देव बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न थे। एक अच्छे अध्यापक, वक्ता, विद्वान, प्रतिभा संपन्न रचनाकार आदि रूपों में प्रसिद्ध हैं। जनतांत्रिक समाजवाद के वे पक्षधर थे। समता, सामाजिक नीति और आज़ादी के लिए लडे थे। इन्होंने मार्क्सवाद और बौध धर्म पर गहन अध्ययन किया। वकील के रूप में नौकरी आरंभ की और बाद में बनारस विद्यापीठ के अध्यक्ष बने। आज़ादी की लड़ाई में भाग लिया, और और शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन के लिए प्रयास किया। 'बौद्ध धर्म दर्शन', 'राष्ट्रपिता और समाजवाद' आदि उनकी रचनाएँ हैं।

**निबन्ध का सार**

समाज की नींव अनुभव के धनी बुज़ुर्गों में रहती है। भारत और चीन इस दिशा में प्रसिद्ध है। अतः बुज़ुर्गों को समाज आदर करता है।

समाज के मौलिक दर्शन में परिवर्तन आना चाहिए। तभी आर्थिक स्थिति में परिवर्तन होगा। नहीं तो समाज उसी तरह रहेगा जिस तरह पहले रहा था। पुराने मूल्यों को जीवन्त बनाने का कार्य युवा पीढ़ी करे। युवा लोगों में साहस, त्याग की भावना, धैर्य आदि रहते हैं। इसके कारण वे चाहे तो पुरानी पीढ़ी से अपना सम्बन्ध तोड सकते हैं। जिस समाज को दीर्घ-दृष्टि नहीं है वह अन्धविश्वासी समाज रहेगा। उसी समाज के युवा लोग ज़मा होंगे और आन्दोलन करेंगे। लेकिन ऐसी स्थिति से मुक्ति, युवाओं को राष्ट्रीयता के प्रति जागरूक करके पा सकते हैं। युवा पीढ़ी की ताकत अपार है।

आज का समय एक युग का अंत और दूसरे युग का आरंभ है। पुराने मूल्य बदलते हैं। संस्थाएँ जीर्ण- शीर्ण हो रही हैं। जनता का आत्मविश्वास बदलता है। समाज के लिए आश्वासन अब इस बात पर है है कि समाज को नेतृत्व देने के लिए युवा लोग आगे आ रहे हैं। लेकिन बुजर्ग लोग नेतृत्व में रहने के कारण धीरे ही वे आ सकते हैं। युवा लोगों को अपनी इच्छा के अनुसार अवसर नहीं मिल रहे हैं। इसलिए वे सृष्टिपरक कामों से मुख मोडकर बेकार विमर्श कर रहे हैं और अपनी ऊर्जा का निष्फल व्यय कर रहे हैं। हैं। विरासत को बनाए रखने का उत्तरदायित्व बुजुर्गों को हैं। वे युवा लोगों को आत्मविश्वास दें और उन्हें उत्तरदायित्व देकर उनके अधिकार से अवगत कराएँ और उन्हें तैयार कर लें। उन्हें अपना अधिकार देकर समर्थ वनाना है। बरकरार व्यवस्था को बदलने का क्रान्तिकारी कदम युवा लोग ही उठा सकते हैं।

आज़ादी के पूर्व राष्ट्र के लिए संघर्ष करके पीड़ाएँ सहने और गोली खाने के अवसर मिले थे। लेकिन लेकिन आज की स्थिति देश के लिए खतरा है। इस खतरनाक स्थिति से युवा लोगों को बचाने के लिए उनके अधिकारों को हमें मानना चाहिए। आनेवाली पीढ़ी को शिक्षा प्रदान कर देश के विकास के लिए उन्हें तैयार करने का दायित्व इस पीढ़ी को है। छुआ छूत और धार्मिक विद्वेष सिर्फ नारे से समाप्त नहीं होते हैं। हैं। इसकेलिए उन्हें आदर्शवादी, साहसी और सुयोग्य बना देना चाहिए। छात्रों को अनुशासन देकर विकसित करना है।

युवा लोग अपार शक्ति के श्रोत हैं। वे जल्दी अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं और वीरता दिखाना चाहेंगे। नेता बनने चाहेंगे। वे विकासवादी नहीं है। अतः उन्हें काम करने का अवसर मिलना चाहिए।

समाज उनकी शक्ति का उपयोग कला के लिए करना चाहिए। अन्यथा उसका दुरुपयोग किया जाएगा। सबसे पहले युवा लोगों के अधिकार को हमें मानना चाहिए। उसके बाद उनके उत्तरदायित्वों को समझाना चाहिए। इतनी ही नहीं, समाज की समस्याओं के बारे में उन्हें समझाना है। उनकी सहायता से समस्याओं का समाधान ढूंढना है। ऐसे ही राष्ट्र का विकास हो जाएगा।

**प्रश्न और उत्तर**

1. **'युवकों का समाज में स्थान' किसका निबन्ध है?**
    - **आचार्य नरेन्द्र देव का।**
2. **चीन और भारत के समाज में किसका नेतृत्व होता है?**
    - **वृद्धों का।**
3. **लोकतंत्र की स्थापना के लिए कैसी शिक्षा देनी चाहिए है?**
    - **सार्वजनिक शिक्षा की।**
4. **समाज में वृद्धों की भूमिका क्या है?**
    - **समाज का आधार अनुभव है। समाज का स्वरूप वृद्धों से निर्धारित है। लेकिन समाज का विकास इनके द्वारा नहीं हो सकता है। वे युवकों की शक्ति को समाज के विकास के हित में उपयोग उपयोग करने के लिए पथप्रदर्शक बने। समाज के विकास को गति देने के लिए वृद्ध लोग युवकों को पथप्रदर्शन करें।**
5. **समाज के विकास में युवकों की भूमिका क्या है?**
    - **युवकों के पास अपार शक्ति है। परिवर्तन लाने की क्षमता उनके पास है। अगर उनका सही सही मार्गदर्शन नहीं करेंगे तो समाज में क्रान्ति और अस्थिरता पैदा होगी। परंपरा को सुरक्षित रखने के लिए वृद्धों के द्वारा मार्गदर्शन की ज़रूरत है।**

**कठिन शब्दों का अर्थ**

**प्रणाली -** രീതി

**आर्थिक ढ़ाँचा -** financial system

**कट्टरपन -** പിടിവാശി

**समझौता -** Compromise

**आन्दोलन -** movement

**पुरानी पीढ़ी -** old generation

**आकस्मिक -** unexpected

**व्यवहार -** behavior

**रचनात्मक कार्य -** creative activity

**टीका-टिप्पणी -** criticism

**जिम्मेदारी -** responsibility

**शिक्षा- दीक्षा -** education

**लोकतंत्र -** democracy

**अस्पृश्यता** - untouchability
**जाति- पाँति** - cast system
**सहयोग** - cooperation
**आदर्शप्रियता** - ideology
**निर्भीकता** - fearlessness
**लगन** - devotion
**उच्छृंखलता** - indiscipline
**आत्मशासन** - self discipline
**प्रगतिशील** - progressive
**प्रतिक्रियावादी** - reactionist

# शिक्षा का उद्देश्य

**लेखक परिचय**

डॉ.संपूर्णानंद हिन्दी के जाने माने निबन्धकार हैं। उनका जन्म 1910ई. में काशी में हुआ। बचपन से ही साहित्य की रचना में लगे। वे जीवन के समस्त क्षेत्रों से जुडे अनेक विषयों पर रचनाएँ करते रहें। आरंभ में वे कवि थे। बाद में गद्य रचनाकार बने। वे महान चिन्तक भी थे। विज्ञान, साहित्य, दर्शन, राजनीति आदि उनकी रचना के विषय बने हैं। इस निबन्ध में शिक्षा के महत्व का प्रतिपादन किया गया है।

**सारांश**

शिक्षा की आवश्यकता क्या है? यह एक ज्वलन्त प्रश्न है। जीवन का लक्ष्य और शिक्षा का उसमें स्थान विचारणीय विषय है। असल में शिक्षा का उद्देश्य क्या है? मनुष्य को पुरुषार्थ के योग्य बनाना है।

हमेशा समाज का अपना एक विशेष दर्शन होता है। क्योंकि सामाजिक जीवन में दर्शन की बड़ी भूमिका होती है। दर्शन ही राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक संरचना को तैयार करता है। इसकी कोई ज़रूरत नहीं है कि एक समाज का आदर्श दूसरे समाज के लिए स्वीकार्य हो। विपरीत दार्शनिक चिंतन संघर्ष का कारण भी बन सकता है। उदाहरण के लिए देखा जाए तो चोरी एक निकृष्ट कार्य है, लेकिन एक देश के द्वारा दूसरे देश का शोषण मान्य नहीं है। झूठ बोलना सही नहीं है, लेकिन राजनीति में सत्य पर खड़ा रहना पराजय होगी। अतः जब हम एक दर्शन स्वीकार करते हैं तब सोच-समझ कर लेना सही होगा।

जहाँ ज्ञान और शक्ति होती है वहाँ आनन्द रहता है। कम ज्ञान होने से दुख ही होगा। इससे हमारे अंदर यह भाव पैदा होगा कि जीवन में कुछ न कुछ खोया हुआ है। तब हम उन्हें पाने की कोशिश करेंगे जो खोए हैं। असल में जीवन का लक्ष्य पुरुषार्थ की प्राप्ति है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को पुरुषार्थ के लिए योग्य बनाना है।

योग विद्या आत्मा की अभिव्यक्ति का मार्ग है। अध्यापक समाज और समाज के व्यक्ति इसके लिए लिए अनुकूल परिस्थिति रूपायित करें। चरित्रवान बनना बडी बात है। प्रत्येक छात्र की आत्मा उसी का ही अन्वेषण करती है। वास्तव में वह इससे अनजान रहता है। वह तो अपने संतोष के अन्वेषण में है। लेकिन

वह अन्वेषण अपने अंदर नहीं करता, बाहर करता है। इच्छित वस्तु जब प्राप्त हो जाती है तब थोडी देर के के लिए सुख का अनुभव होगा। थोडी देर बाद मन दूसरी वस्तु मिलने के लिए आग्रह करेगा। लेकिन यथार्थ वस्तु कभी नहीं मिलेगी। इसलिए असल में सभी लोग अन्वेषण में है। इस खोज में संघर्ष पैदा होगा। उदाहरण के लिए, अन्धकार भरे कमरे में किसी वस्तु को दस लोग ढूँढने लगे तो आपस में ज़रूर टकराएँगे। वह वस्तु सिर्फ एक ही व्यक्ति को ही मिलेगी।

विद्यार्थी के मन को एकाग्र करने का दायित्व अध्यापक को है। यही एकाग्रता उनके आत्मसाक्षात्कार की कुंजी है। छात्रों को निष्काम कर्मों के लिए प्रेरित किया जाएँ। उनमें नैतिक या धार्मिक अवधारणाएँ पैदा करें। सच्ची सेवा आनन्ददायक है। जो भूखे हैं उन्हें आनन्द देना, जो डूबने जा रहे हैं उनकी रक्षा करना आदि कार्य सभी को सन्तोष प्रदान करेगा।

मन की अपक्व वासनाओं को दूर करने के लिए ललित कलाएँ सहायक हैं। विद्यार्थी हमेशा सच्चरित्रवान हो। छात्रों में धर्म का बोध पैदा करने के लिए अध्यापक लोग प्रयास करें। धार्मिकता अच्छी बात है। प्रत्येक व्यक्ति की भलाई सभी की भलाई है। बडे बडे दायित्व ही असल में धर्म है। सभी लोग अपने समाज में अपने अधिकार के लिए कोशिश करते हैं। यह कोशिश एक निरंतर संघर्ष है। इस संघर्ष में अगर हमारे पास धार्मिकता है तो कभी कोई विवाद नहीं होगा और सभी को अपना- अपना अधिकार मिलेगा।

छात्रों को सच्चे चरित्रवान बनाने का कर्तव्य अध्यापक का है। श्रेष्ठ गुरू के शिष्य विनयवान होते हैं। उनके लिए पुरुषार्थ निश्चय ही मिल जाएँगे। ऐसे छात्र अपनी गलतियों को समझेंगे। वे अपनी गलतियों को सुधारेंगे। गुरू को प्यार से अपने छात्रों को सही रास्ते पर चलाना है।

**प्रश्न और उत्तर**

1. शिक्षा का उद्देश्य लेख किसका है?
   - डॉ. संपूर्णानंद का।
2. शिक्षा का लक्ष्य क्या होना चाहिए?
   - शिक्षा का लक्ष्य पुरुषार्थ की प्राप्ति होनी चाहिए।
3. आदर्शों के बीच क्यों संघर्ष होता है?
   - प्रत्येक समूह का अपना आदर्श होता है जो एक दूसरे से भिन्न है, इसलिए संघर्ष होता है।
4. आनंद कहाँ से प्राप्त होता है?
   - आत्मा से।
5. आत्मसाक्षात्कार के लिए क्या करना चाहिए?
   - योग साधना इसके लिए एक मार्ग है।
6. ज्ञान की कमी किसका कारण बनती है?
   - दुख का।
7. मन की बुरी वासनाएँ दूर करने के लिए क्या मार्ग है?
   - इसके लिए ललित कलाएँ सीखनी चाहिए।
8. अंधेरी कोठरी में एक वस्तु की खोज कोई करें तो क्या फल होगा?
   - आपस में टकराएँगे। एक वस्तु सभी को एक साथ नहीं मिलेगी, एक को ही मिलेगी।

**9. आनंद की प्राप्ति के लिए कैसा कर्म करना चाहिए?**

- **निष्काम कर्म।**

**10. आदर्श समाज कैसे मिलता है?**

- **आदर्श समाज धार्मिकता के आधार पर अनंत संघर्ष से युक्त हो और प्रत्येक व्यक्ति को अपना अधिकार अधिकार प्राप्त हो, ऐसा समाज आदर्श समाज होता है।**

**11. चरित्रवान शिष्य को तैयार करने के लिए गुरू को क्या करना चाहिए?**

- **छात्रों में पुरुषार्थ सुनिश्चित करें ताकि वे अपनी गलती स्वयं समझ सकें और स्वयं सुधारें।**

**कठिन शब्दों का अर्थ**

**दार्शनिक -** philosopher

**घनिष्ट संबन्ध -** intimacy

**कौटुम्बिक व्यवस्था -** family condition

**राजनीतिक क्षेत्र -** political field

**अल्पज्ञ -** ignorant

**पाठ्य- विषय -** syllabus

**ब्योरा -** details

**चरित्र -**character

**अँधेरी कोठरी -** ഇരുട്ടറ

**ग्लानि -** ഉത്സാഹമില്ലായ്മ

**राग-द्वेष -** love and hatred

**निष्कामिता -** desire lessnes

**कल्याणकारी -** beneficial

**वंशज -** progeny

**निर्बाध प्रेम -** unobstructed love

**कदाचार -** misconduct

**सीढ़ी -** ladder, steps

**क्षुद्र वासना - बुरी वासना**

# सभ्यता का रहस्य

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के उपन्यास सम्राट जाने जाते हैं। उत्तर प्रदेश में सन् 1880ई. में उनका जन्म हुआ। सन् 1936ई. में उनकी मृत्यु हुई। उनका असली नाम 'धनपतराय' था। ब्रिटीश सरकार की नीति के कारण उन्हें प्रेमचंद नाम को स्वीकारना पड़ा। उन्होंने 300 से अधिक कहानियाँ लिखीं। 12 उपन्यास लिखे। उपन्यासों में सबसे प्रमुख 'गोदान' है। कहानियों में सबसे प्रसिद्ध 'कफन', 'पूस की रात', 'ठाकूर का कुआ' आदि हैं। एक लेखक के रूप में वे हमेशा सामान्य जनता के पक्ष खडे रहे। प्रस्तुत निबन्ध में वे सभ्यता पर विचार करते हैं।

निबन्ध का सारांश

राय रतन किशोर सहृदय एवं उदारवान है। इसके अलावा शिक्षित और ऊँचे पद पर रहते हैं। ज्यादा कमाते हैं, पर खर्च करने में सतर्क है।

एक बार मैं उनके घर गया। तब वे अपने नौकर से बोल रहे थे- मैं तुमें वेतन इसलिए दे रहा हूँ कि तुम रात- दिन काम करे। कल तुम यहाँ सोये नहीं, अतः कल का वेतन नहीं दिया जाएगा। तब उसने जवाब दिया कि उसके घर में अतिथि आए हुए थे। अपराध के लिए उसने क्षमा भी मांगी और कहा कि आगे ऐसी गलती कभी नहीं करेगा। ऐसा बिनती करने के बावजूद भी राय साहब ने नहीं माना। उन्होंने उसपर दो रूपए का जुर्माना डाला।

राय साहब उच्च वेतन भोगी है। लेकिन वह वेतन उसके लिए पर्याप्त नहीं है। उनके 'डे बुक' में वे हमेशा दौरे पर है। लेकिन वह कभी भी दौरे पर नहीं जाते हैं। जितना भी पैसा मिले उससे वे संतृप्त नहीं है। एक बार मुझसे मितव्यय के बारे में कहा था। उनके पिताजी के निधन के बाद सारी संपत्ति अपने हिस्से में कर दिया गया। उन्होंने कहा- जब पिताजी जीवित थे, तब वे हर साल त्योहार मनाते थे। जब मेरा नियंत्रण संपत्ति पर होने लगा तब मैं ने इन सबको बन्द किया। गरीबों के घर में विवाह के अवसर पर लकड़ी मुफ्त में में दी गयी थी। उसको भी मैं ने बन्द किया। जब मैं ने ऐसा किया तो लोगों ने मेरे बारे में भला- बुरा कहा। मैं ने उसकी परवाह नहीं की। क्योंकि पैसे के स्थान पैसा ही चाहिए न?

राय साहब के नौकर का नाम है दमडी। उसको अपने नाम पर थोडी सी ज़मीन है। वह अपने परिवार के साथ उसमें खेती करता है। फिर भी भूख नहीं मिटती है। उसके पास दो बैल हैं। बैल घर के ऐश्वर्य है। किसान का मतलब, बैलों का मालिक होना है। पर परिवार के लोग बाहर काम के लिए जाए तो पेट भर भोजन मिलेगा। लेकिन एक किसान होने के कारण बाहर काम के लिए जा भी नहीं सकता, लोग क्या सोचेंगे, इसका डर है। यही नहीं ऐसा करने पर अपने लड़कों को अच्छे घराने से लड़की नहीं मिलेगी।

ठंड का मौसम किसी न किसी प्रकार गुज़र गया। एक दिन दमडी छुट्टी लेकर घर आया। उसे भूखे बैल रोने लगे। भूसा खतम हो गया था। दमडी सोने गया। थोडी देर बाद उठा तो बैल तब भी रो रहे

थे। उस दिन चाँदनी की रात थी। बैलों के लिए कुछ धान के पौधे काट लाया। पुलीस ने उसे पकडा। पुलीस को जब मालूम हो गया कि इससे घूस नहीं मिलेगा तो वे उसे राय रतन किशोर के आगे पेश किया। राय रतन किशोर ने उसके साथ निर्दय व्यवहार किया। उन्होंने कहा कि - तूने मेरे नाम को कलंकित किया। मैं कैसे दूसरे लोगों के मुख पर देखूँगा। इसलिए तेरे प्रति कठोर कारवाई की जाएगी। उसे छः महीने का कारावास दिया।

गलती चाहे तो कोई भी कर सकता है, लेकिन उसको छिपाकर रखने के लिए सीखना है। तब वह आदरणीय होगा। अगर वह ऐसा न कर सकता है तो वह असभ्य और गुन्डा बन सकता है।

प्रेमचंद ने इस निबन्ध के द्वारा सभ्यता का रहस्य उद्घाटित किया है।

**प्रश्न और उत्तर**

1. 'सभ्यता का रहस्य' किसका निबन्ध है?
   - प्रेमचंद का।
2. प्रेमचंद का असली नाम क्या है?
   - धनपतराय
3. राय रतन किशोर कौन है?
   - सभ्यता का मुखौटा पहना व्यक्ति।
4. राय रतन किशोर को समाज ने किस प्रकार देखा है?
   - समाज ने उन्हें सहृदय, उदार और उन्नत अधिकारी के रूप में देखा है।
5. दमडी कौन है?
   - राय साहब के घर का पूर्णकालीन नौकर।
6. राय साहब ने दमडी का वेतन क्यों कटना चाहा?
   - दमडी एक दिन राय साहब के घर रात को आकर सोया नहीं था। इसलिए उसका पूरा वेतन काट दिया।
7. राय साहब कैसा आदमी था?
   - राय साहब 'डे बुक' में हमेशा दौरे पर है, ऐसा दिखाकर सरकारी पैसा हडप लेते थे। वे रिश्वत भी लेते थे।
8. दमडी ने क्या अपराध किया था?
   - दमडी ने अपने भूखे बैलों के लिए खेत से धान का पौधा काटा था। इस पर उसे पुलीस द्वारा पकडा गया और उसे कड़ी सज़ा मिली।
9. राय साहब की सभ्यता क्या थी?
   - राय साहब जुल्म करके उसे छिपाते हैं और दूसरों के छोटे जुल्म पर कड़ी सज़ा देते थे।

**कठिन शब्दों का अर्थ**

**सभ्यता -** culture

**शराब का नशा -** മദ്യലഹരി

**लड़खड़ाना -** കാലിടറുക to stagger

**इने- गिने -** selected

**ओहदेदार -** office bearer

**रिश्वत -** bribe, കൈക്കൂലി

**दौरा -** tour

**बदनामी -** disrepute

**वालिद -** father

**इजलास -** court

**खुशामद -** flattery

**बेदाग -** clean

**बेसब्र - असहनीय**

**इज्ज़त -** honour, respect

**बिगड़ करना -** to be damaged

**बेहुदा -** stupid, vulgar

**वादा -** promise

**गड़बड़ -** confusion

**हिमाकत -** foolishness

**नफरत -** disgust

**ज़हर -** poison

**जुआर -** gambling

**ऊँट के मूँह में जीरा -** a drop in the ocean

**नाँद -** manger

**नुकसान -** loss

**खेत -** field

# नेता नहीं नागरिक चाहिए

श्री रामधारी सिंह दिनकर बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। दिनकर बीहार राज्य के थे।वे सरकार के ऊँचे पद पर रहे थे। 40 किताबें उनकी ओर से लिखी मिली हैं। भारत सरकार ने इनको ज्ञानपीठ पुरस्कार देकर आदर किया था। 'संस्कृति के चार अध्याय' शीर्षक उनकी किताब बहुत प्रसिद्ध है। 'उर्वशी', 'कुरुक्षेत्र' आदि उनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं। उनका एक विचारात्मक लेख है- 'नेता नहीं नागरिक चाहिए'।

निबन्ध का सारांश

सन् 1921ई. में एक विज्ञापन आया था- "आप क्या स्वराज चाहते हैं तो लेक्चर देना सीखिए" यह किसी पुस्तकवाले का विज्ञापन था। हमारे देश में भाषण की कोई कमी नहीं है। भाषण देनेवाले नेता भी बहुत हैं हमारे देश में। आज़ादी की लडाई जब चल रही थी तब हमारे सामने एक ही समस्या थी। वह थी अंग्रेज़ों को कैसे हम भगा सकेंगे। उसके लिए जीवन तक अर्पित करने के लिए लोग तैयार थे। उन्हें हम जनता के नेता मानते थे।

आज़ादी के बाद सारे अधिकार नेताओं के हाथ में आए। तभी हमें यह समझ में आया कि हमने सिर्फ नेताओं को ही पैदा किया है, नागरिकों को नहीं। सभी नेता सिर्फ बोलते हैं। कथनी को करनी में परिवर्तित नहीं कर रहे हैं।

हमारे देश में सभी यह चाहते हैं कि वे नेता बन सकें। सभी लोग नेता बने तो नागरिक कहाँ मिलेंगे। ऐसा एक देश कैसे बन सकता है जहाँ सिर्फ नेता ही होते हैं। सभी लोग पंडित नेहरू बन जाएँ तो करोडों जनता क्या करेगी। करोडों जनता के लिए भोजन, कपडे आदि कौन बनाएगा। कौन गाड़ी चलाएगा।

आज समता का नारा सब कहीं गूँजता है। सभी लोग भविष्य की ओर देख रहे हैं। सभी यह सोचते हैं कि अपने लिए योग्य पद नहीं मिले हैं। अपने ऊपर जो बैठते हैं, उन्हें किसी न किसी प्रकार गिरा दें और उस स्थान पर जाकर वह बैठें। उसके लिए कुछ भी करने को लोग तैयार हैं।

सभी को स्वयं ऊपर आने के लिए अवसर है। उसे प्राप्त करने की क्षमता उनमें चाहिए। साहस, इच्छा और और क्षमा चाहिए। कुछ लोग काम करने लिए नहीं दूसरों से काम कराने का आग्रह करते हैं। ऐसा कराने के लिए उसके पास योग्यता चाहिए। काम करने के लिए जो चाहते हैं वे कभी निराश नहीं होते हैं। शक्ति और अधिकार कठिन मेहनत करनेवाले और ईमांदार लोगों में रहते हैं। आज दुनिया कठिन परिश्रम करनेवाले लोगों को खोजती है। क्योंकि प्रत्येक नेता अपने दायित्वों को ईमांदार लोगों पर सौंपाना चाहते हैं। अधिकार का सुख उत्साही और ईमांदार अनुयायियों को मिलता है। तब नेता बनने के लिए प्रतियोगिता की क्या आवश्यकता है। सत्ता का विकेन्द्रीकरण वास्तव में इस प्रकार होता है।

नेता बनने की आतुरता व्यक्ति को अधःपतन की ओर ले जाएगी। दुनिया नेतृत्व के आग्रह का गुलाम है। व्यापारी लोग कालाबाज़ारी करके धन कमाकर सबसे आगे आना चाहते हैं। कर्मचारी अपने 'बोस' को नीचे उतारकर उनकी कुर्सी पर रहना चाहता है। विद्वान लोग यह कहते हैं कि समाज का पतन हुआ है। अतः जल्दी ही समाज को सुधारना चाहिए। जनता का सामान्य जीवन, भाषण से, धोखा-धडी से मलिन बना दिया गया है। ये सब नेता बनने के लिए व्यक्ति के अमित आग्रह की बुरी परिणिति है। अपने लक्ष्य की महानता को जाननेवाले व्यक्ति कभी भी गलत रास्ते पर नहीं जाते हैं। समाज की भलाई व्यक्ति के गुण पर आश्रित है। व्यक्ति को अपने जीवन के ज़रिए आदर्श का नमूना बनना चाहिए। वे समाज के अभिन्न अंग बने। हम यह समझें कि समाज का भला दो- तीन नेताओं पर आश्रित नहीं है। आज समाज के लिए सुयोग्य नागरिकों की बडी आवश्यकता हैं न कि नेता लोग।

**प्रश्न और उत्तर**

**1. 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' यह किसकी रचना है?**

- रामधारी सिंह दिनकर की।

**2. अगर सभी नेता बने तो कष्ट क्या है?**

- कोई काम नहीं चलता, धान कौन पैदा करेगा? गाड़ी कौन चलाएगा? देश की दुरवस्था हो जाएगी।

**3. देश के लिए कैसे नागरिक की आवश्यकता है?**

- सुयोग्य नागरिकों की।

**4. सत्ता का आनंद किसको मिलता है?**

- उत्साही एवं ईमान्दार अनुयायियों को मिलता है।

**5. नेता बनने की आतुरता व्यक्ति को किस ओर ले जाती है?**

- पतन की ओर।

**कठिन शब्दों का अर्थ**

**इश्तहार** - notification
**पुस्तक- विक्रेता** - book seller
**झड़ी** - non-stop shower
**बेशुमार** - countless
**हुकूमत** - rule
**कुरबानी** - sacrifice
**मज़मून** - subject
**नतीजा** - effect, result
**वाजिब** - reasonable
**तत्परता** - interest
**मुस्तैदी** - readiness
**धीरता** - courage, bravery
**नेतागिरी** - leadership
**लियाकत** - ability
**छलाँग मारना** - to jump
**हुक्म चलाना** - to control
**मातहत** - subordinate
**हिदायत** - instruction
**बेचैन** - restless
**नाखुश** - displeased
**इर्द-गिर्द** - **आसपास**
**फेर** - twist, turning
**इंसानियत** - humanity
**हानिकारक** - ദോഷം ചെയ്യുന്ന
**नाराज़ी** - anger
**हमीं बरतना** - **हाँ में हाँ मिलाना**

# त्रिशंकु बेचारा

**लेखक परिचय**

**श्री. हरिशंकर परसाई जाने-माने हास्य- व्यंग्य रचनाकार हैं। ये मध्यप्रदेश के इटावा जिले के इटारसी के पास 'जमानी' गाँव से हैं। हिन्दी साहित्य में एम. ए किया और अध्यापक बने। फिर पूर्णकालिक साहित्यकार बने। उपन्यास और कहानियाँ लिखीं। उनके व्यंग्य लेख भी चर्चित हैं। हिन्दी में सबसे अधिक पाठक परसाई जी को है। 'तब बात और थी', 'भूत के पाँव नीचे', 'सदाचार का तावीज़' आदि उनके लेख संग्रह हैं।**

**निबन्ध का सार**

**त्रिशंकू एक मास्टर था। वह शहर के गंदे इलाके में एक छोटे घर में रहता था। वे इससे परेशान थे। उनकी एकमात्र अभिलाषा यह थी कि किसी न किसी प्रकार एक अच्छे इलाके में अच्छे मकान में रहें। घर के मालिकों के बच्चे उनके स्कूल में पढ़ते थे। उन्हें वे अच्छी तरह प्यार करते थे। परीक्षा के पहले उन्हें प्रश्न पत्रिका के मुख्य सवाल वे बता देते थे। उन्हें यह विश्वास था कि इसके प्रतिफल के रूप रूप में कोई मकान मालिक उनकी सहायता करेगा। इस इलाके में रेंट कन्ट्रोलर विश्वामित्र रहते थे। वह भी खाली मकानों को किराये पर देता था। उनका बेटा भी त्रिशंकू के क्लास में पढ़ता था। वह पढ़ाई में पीछे था। त्रिशंकू ने उसे प्रश्न पत्र देकर परीक्षा में उपकार किया। विश्वामित्र ने इसकेलिए प्रतिफल देना चाहा। त्रिशंकू ने अपना आग्रह कहा कि कहीं कोई अच्छी जगह, अच्छा मकान मिले। थोडा सोचकर विश्वामित्र ने कहा कि आपका आग्रह बड़ा है। एक अच्छा घर मिलना आज मुश्किल है चाहे एक प्रदेश मांगने पर मिल सकता है। फिर भी मैं आपकी इच्छानुसार एक मकान दिला दूँगा।**

**विश्वामित्र ने फोन पर इन्द्रजी से बात की। फिर त्रिशंकू से कहा- आपका आग्रह सफल हुआ है। इन्द्रपुरी (सिविल लाइन) में इन्द्रदेव नामक एक आदमी के पास बहुत मकान हैं। उनमें एक का प्रबन्ध आप के लिए किया है। किराये के बारे में मैं बात करूँगा। आज शाम तक वहाँ पहुँचकर रहना शुरू करें। मेरा घर आज ही खाली कर सकते हैं। अगर कल होगा तो एक महीने का किराया अधिक देना पडेगा।**

**त्रिशंकू असमंजस में पड गया। सिविल लाईन में दूसरे प्रकार का जीवन जीना होगा। वहाँ के लोग मुझे कैसे स्वीकार करेंगे। उनके इस संदेह पर विश्वामित्र ने कहा- वहाँ सभी तरह के लोग रहते हैं। यह घर जो आपके लिए मिला है, आपके लिए सौभाग्य है। और यह भी विश्वास दिलाया कि आपको इन्द्रजी आदर के साथ स्वीकार करेंगे।**

**शाम तक त्रिशंकू ने घर खाली कर दिया और घर के सामान लेकर रिक्शा में सिविल लाईन के इन्द्रजीत के पास पहूँचे। त्रिशंकू को देखते ही गालियाँ देकर बोलने लगा- यह अनाथों का अखाडा नहीं है। तुम्हारे पास गाड़ी है? फ्रिज है क्या? चाहे विश्वामित्र के बाप ही क्यों न हो यहाँ रह नहीं सकते। यह यह कोई अनाथालय नहीं है। त्रिशंकू ने कुछ नहीं कहा और रिक्शा में वापस विश्वामित्र के पास पहुँचा।**

विश्वामित्र ने इन्द्रजीत पर खूब गालियाँ बरसायीं। और यह भी कहा कि वहाँ एक घर दिलाया जाएगा ज़रूर। क्योंकि यह मेरे गौरव का प्रश्न है। इसी बीच अपना घर वापस देने के लिए त्रिशंकू ने बिनती की। लेकिन वह घर दूसरे किसी को दिया गया था। त्रिशंकू ने कहा अभी तत्काल किसी एक सत्र में शरण लें। त्रिशंकू सत्र में रहने लगा। आज भी वे वहाँ हैं।

प्रश्न और उत्तर

1. 'त्रिशंकू बेचारे' का रचनाकार कौन है?
   - हरिशंकर परसाई
2. त्रिशंकू कौन है?
   - त्रिशंकू एक मामूली अध्यापक है
3. त्रिशंकू का एकमात्र आग्रह क्या था?
   - अच्छे मुहल्ले में अच्छे मकान में रहना।
4. विश्वामित्र ने त्रिशंकू को मकान दिलाने का वादा क्यों दिया?
   - त्रिशंकू ने विश्वामित्र के वच्चे को प्रश्न पहले ही देकर परीक्षा में पास कराया। इसके प्रतिफल के रूप में वादा किया।
5. मकान मिलने के बारे में विश्वामित्र की टिप्पणी क्या थी?
   - अच्छा मकान मिलना आसान नहीं है बल्कि एक प्रदेश मिलना कठिन नहीं है।
6. विश्वामित्र ने त्रिशंकू के साथ क्या किया?
   - इन्द्रजी को फोन करके सिविल लाईन में अच्छा मकान मास्टर त्रिशंकू को दिलाने का प्रबन्ध किया। त्रिशंकू से अपना मकान खाली करके इन्द्रजी के पास जाने को कहा।
7. इन्द्रजी ने क्या कहा?
   - इन्द्रजी ने त्रिशंकू को गालियाँ देकर भगाया। क्योंकि उसके पास कार, फ्रिज कुछ भी नहीं है।
8. त्रिशंकू ने विश्वामित्र के पास वापस आकर क्या माँगा?
   - अपने पहले का मकान माँगा।
9. विश्वामित्र ने त्रिशंकू को क्या उपदेश दिया?
   - किसी शरणालय में रहने का उपदेश दिया।
10. पौराणिक पात्र त्रिशंकू की कथा के साथ मास्टर त्रिशंकू की कथा की क्या समानता है?
    - पौराणिक पात्र त्रिशंकू स्वर्ग और नरक के बीच रहा। उसी प्रकार मास्टर त्रिशंकू भी बीच में सत्र में पडा।

**कठिन शब्दों का अर्थ**

**मुहल्ला -** village, street
**शिकायत -** complaint
**उतावली -** speed, rashness
**ऋण -** loan
**दुविधा -** dilemma
**ठुकराना-** to kick, to reject
**लदवाया -** loaded
**बगीचा -** garden
**हिदायत -** guidance
**माथा गरम होना -** to get angry
**झल्ला पड़ना - गुस्सा करना**
**क़ाबलियत -** capacity, clearness
**भिखमंगे -** beggars
**कैक्टस -** കള്ളിച്ചെടി
**तबादला -** transfer
**भृकुटि -** eye-brow
**हिम्मत -** courage
**धर्मशाला -** a house for pilgrims

# मेरी बद्रीनाथ यात्रा

**लेखक परिचय**

**विष्णु प्रभाकर उत्तर प्रदेश के मुज़फर नगर से हैं। बी.ए की उपाधि के बाद लेखन कार्य में जुड़े। जुड़े। कई पुस्तकें लिखीं। कहानी, उपन्यास, नाटक आदि क्षेत्रों में अपनी लेखकीय प्रतिभा दिखायी। उनकी रचनाओं में यथार्थ, आदर्श, स्वाभाविकता आदि देख सकते हैं। 'मेरी बद्रीनाथ यात्रा' उनका एक उत्कृष्ट यात्राविवरण है।**

**सारांश**

**कालिदास ने हिमालय को पर्वतों का राजा कहा था। यह बेकार नहीं हुआ। हिमावृत यह पर्वत अपनी ऊंचाई के लिए प्रसिद्ध है और अपने सौन्दर्य के लिए कीर्तिमान है। इससे बहनेवाली गंगा आदि नदियाँ ईश्वर साक्षात्कार के लिए परिश्रम करती दिखाई पडती हैं। देवदारू वृक्ष, कई तरह के पक्षी, कस्तूरीमृग आदि को हम हिमालय में देख सकते हैं। गंगा नदी पर अनुसंधान करने के लिए, दक्ष के दूत को रास्ता दिखाने के लिए, शिव और पार्वती के नृत्य देखने के लिए, देवों व प्रकृति की आराधना के लिए लोग इस कठिन मार्ग से यात्रा करते हैं।**

**बद्रीनाथ-यात्रा का समय मई महीने में है। हमारे संघ में सभी उम्र के स्त्री, पुरुष थे। इनके अलावा अनुवादक और कई धर्मावलंबी भी थे। 'पीपलकोटी' तक बस में यात्रा संभव है। वहाँ से इक्तीस किलोमीटर पैदल जाना है। हम पहले केदार नाथ गये। वहाँ से छोटे रास्ते से चमौली पहँचे। वहाँ से पीपल कोटी तक बस गाड़ी है। इस रास्ते पर केदार नाथ के लिए शीतकाल राजधानी उषीमठ रहता है और हिन्दुओं का मंदिर तुंगनाथ भी है। रास्ता काफी कठिन है। इसी कारण से इसका अपूर्व सौन्दर्य देख सकते हैं।**

**हर रोज़ सुबह तीन बजे उठते हैं। नित्य कर्म के बाद यात्रा शुरू करते हैं। रोज़ इससे अठारह मील तक चलते हैं। रास्ता कहीं ऊपर चढता है तो कहीं नीचे चलती है। कहीं सांकरी पथ है तो कहीं बड़े बड़े पत्थर है। कहीं झरना है कहीं घना जंगल, कहीं बडी गर्मी है तो कहीं ठंड और ठंड हवा बहती है।**

सबको झेलकर हमारी यात्रा ज़ारी रही। एक दिन रात को एक वृद्ध ने बिच्छु- बिच्छु चिल्लाया। देखा तो क्या था, चावियों का गुच्छा।

उषीमठ से सुबह-सुबह 12080 फुट ऊँचाई पर स्थित तुंगनाथ की ओर चले। प्रकृति सुन्दरी थी। अलकनन्दा बदरीनाथ में है। पाताल- गंगा देखा। माना जाता है कि यहाँ पार्वती ने शिव को मिलने के लिए तपस्या की थी। अगला स्थान जोशीमठ है। शंकराचार्य के द्वारा स्थापित एक मठ यहाँ है। अन्य तीन मठ ये हैं- श्रृगेरी, द्वारका और पुरी।

विष्णुप्रयाग में विष्णु गंगा और अलकनन्दा का संगम स्थान देख सकते हैं। फिर पाण्डु राज के द्वारा स्थापित पाण्डुकेशर आता है। अलकनन्दा में जलप्रपात बहुत सुन्दर है। अलकनन्दा के दायीं ओर विशालपुरी आता है। माना जाता है कि वहाँ बैठकर भगवान नारायन के रूप में तपस्या की थी। 10480 फुट ऊँचाई पर यहाँ का मन्दिर शंकराचार्य के द्वारा निर्मित है।

अलकनन्दा के किनारे बदरीनाथ से दो मील दूर पर भारत की सीमा है। यहाँ प्रकृति अति सुन्दर है। तप्तकुण्ड नामक तालाब जो वहाँ है सभी को आश्चर्यचकित कर देते हैं। मंदिर में पूजादि के बाद हम वापस लौटे।

प्रश्न और उत्तर

1. 'मेरी बद्रीनाथ यात्रा' किसकी है?
   - विष्णु प्रभाकर की।
2. बद्रीनाथ कहाँ स्थित है?
   - हिमालय पर।
3. बद्रीनाथ यात्रा किस महीने में करते हैं?
   - मई महीने में।
4. सबसे ऊँचाई पर रहने वाला मंदिर कौन-सा है?
   - तुंगनाथ।
5. जोशी मठ की स्थापना किसने की थी?
   - शंकराचार्य ने।
6. विष्णुप्रयाग में क्या है?
   - विष्णु गंगा और अलकनन्दा का संगम।
7. पाण्डुकेश्वर की स्थापना किसने की?
   - पाण्डु राजाओं ने।
8. विशालमुखी का क्या महत्व है?
   - विशालमुखी से दो मील दूर पर भारत की सीमा है।
9. तप्तकुण्ड का पानी कैसा है?
   - तप्तकुण्ड का पानी गरम है।
10. यात्रा के दौरान रात में वृद्ध ने चिल्लाकर क्या कहा?
    - वृद्ध ने बिच्छु- बिच्छु चिल्लाया। मोमबत्ती के प्रकाश में देखा तो वह चाबियों का गुच्छ था।

कठिन शब्दों का अर्थ

**नगाधिराज - साँपों के राजा**

**बर्फ -**

**अलख जगाना -** ഈശ്വര പ്രാപ്തി

**देवदारू -**

**भोजपत्र -**

**उत्तुंग हिम शिखर-**

**रजत -**

**इन्द्रधनुष -**

**अटक जाना - स्थिर रहना**

**सांस्कृतिक एकता -**

**विभिन्नता -**

**प्रतिदिन -**

**पथरीला पथ -**

**चट्टानी मार्ग -**

**सँकरी पगडंडी -**

**सरिता -**

**छायाहीन -**

**कारवाँ -**

**पोशाक -**

**हाँफना -**

**ढ़लान -**

**झगडना -**

**वयोवृद्ध -**

**घिघिया रहना -** ഇളിക്കുക

**गुच्छा -**

**खिल खिलाना-**

**धवल रंग -**

**कुहरा -** മഞ്ഞ്

**घाटी -**

**प्रपात -**

**नटखट -** കുസൃതി

**टेढ़ी- मेढ़ी -** വളഞ്ഞ് തിരിഞ്ഞ

**सीधी उतराई -** കുത്തനെയുള്ള ഇറക്കം

**संघर्षशील -**

**गोद -** , മടിത്തട്ട്

**तट -** , തീരം

**कारा-निद्रा -**

**गदगद होना -** തൊ യിടറുക

# कबीर

कवि परिचय

कबीर निर्गुण भक्ति धारा के प्रमुख संत कवि है। उनका जीवन काल सन् 1397 से लेकर सन् 1518ई. तक है। वे अनपढ थे। लेकिन देशाटन और साधुओं की संगति से वे बडे ज्ञानी बने। वे कवि होने के साथ साथ अच्छे समाज सुधारक भी थे। उन्होंने जाति-पाँति का विरोध किया और हिन्दु मुस्लिम एकता के लिए काम किया। समाज में प्रचलित अंधविश्वासों के विरुद्ध वे अंत तक लडते रहे।

कबीर बडे जीवनानुभवी थे। उनकी बाणी अनुभव से आयी है। उनकी भाषा सधुक्कडी थी याने साधुओं की भाषा। उनके सारे काव्य बीजक में संकलित है जिनके तीन भाग है - साखी सबद और रमैनी। उनके अनुसार ईश्वर को पाने का परम साधन प्रेम है। कबीर हिन्दी साहित्य के लिए मूल्यवान रत्न है। उनकी कविता आज भी बहुत चर्चित है। इस महान कवि के गुरु रामानंद माने जाते हैं।

**दोहों की व्यख्या -**

1) राम नाम कै पंटतरै, देबे कौं कछु नाहि।
क्या लै गुरु संताखिए , हौंस रही मन मांहि॥

(पटतरे-के बदले में, देख को-देने को, कछु नाहि -कुछ भी नहीं, संतोखिए-संतुष्ट करें, हौंस रही-प्रबल इच्छा रही, मन माहि-मन में )

इस दोहे में कबीरदास बताते हैं कि गुरु ने मुझे रामनाम रूपी अमूल्य रत्न दिया है। उसके बदले में देने के लिए कोई वस्तु इस संसार में नहीं है। क्योंकि रामनाम के समान दूसरी वस्तु दुनिया में नहीं है। कबीर सोचते हैं कि क्या देकर मैं गुरु को संतुष्ट करूँ। गुरु को कुछ देने का आग्रह मन में रहता है।

इस दोहे में कबीर ने गुरु महिमा और राम नाम की महिमा का प्रतिपादन किया है। कबीर यह व्यक्त करना चाहते हैं कि रामनाम के अनुरूप और कोई दक्षिणा दुनिया में और कुछ नहीं है।

2) चकई बिछुरी रैंनि की, आई मिलै परभाति।
जे नर बिछुरे राम सौं, ते दिन मिले न राति॥

शब्दार्थ -

(चकई-चक्रवाक पक्षी, बिछुरी-अलग हुई, रैनी-रात, मिलै-मिल जाता, परभाति-प्रभात में, जे नर-जो मनुष्य, सैं-से, ते-उसे, मिले न -नहीं मिलता है, राति-रात्रि)

इस दोहे में कबीर का कहना है कि चक्रवाक पक्षी के जोडे रात में अलग हो जाते हैं और बुबह आकर मिल जाते हैं। लेकिन जो मनुष्य ईश्वर से अलग हो जाते हैं वे कभी भी ईश्वर से नहीं मिलते हैं। वे सदा के लिए भगवान से अलग हो जाते हैं।

इस दोहे के द्वारा कबीर यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि जो व्यक्ति प्रभु पर विश्वास नहीं करता है वह कभी संतुष्ट नही रहता। उसका जीवन अर्थहीन हो जाता है।

3) विरहा-विरहा मति कहौ, विरहा है सुलतान ।
जिंहि घट विरह न संचरै, सो घट सदा मसान ॥

(विरहा-विरह, मति कहौ-मत कहो, जिहि -जिस, घट-शरीर, संचरै-संचार करता है, सो -वह, मसान-स्मशान)

कबीर कहते हैं कि विरह को बुरा मत मानो । क्योंकि विरह सुल्तान के समान है । जिस शरीर में विरह नहीं रहता वह शरीर श्मशान जैसा है ।

इस दोहे में कवि स्पष्ट करना चाहते हैं कि विरह के महत्व को कोई नहीं जानता है । सब लोग विरह पर रोते हैं । कोई यह नहीं सोचता है कि विरह के कारण ही मिलन इतना सुखद होता है । वास्तव में विरह प्रेम की कसौटी है । अत: जीवन में विरह का होना अनिवार्य है ।

4) परबति परबति मै फिरा, नैन गँवाया रोई ।
सोबूटी पाऊ नहीं, जाते जीवन होई

शब्दार्थ-

(परबति-पर्वत, फिरा-घूमा, नैंन-आँख, गँवाया, नष्ट किया, रोई -रोया, सो-वह, बूटी-औषधि, जातै-जिससे)

कबीर कहते हैं कि मैं ईश्वर के अन्वेषण में पर्वत-पर्वत पर घूमता-फिरा । भगवान को पाने के लिए रो-रोकर आँखों को नष्ट कर दिया । परन्तु ईश्वर रूपी औषधि नहीं मिली । इसलिए जीवन व्यर्थ हुआ ।

कवि इस दोहे के आधार पर कहना चाहते है कि ईश्वर की प्राप्ति सरल नहीं है । इसके लिए कठिन तपस्या ही करनी चाहिए । भगवान से साक्षात्कार भक्त के लिए परम आनंद प्रदान करता है ।

**प्रश्न और उत्तर**

1. कबीर किस भक्तिधारा के कवि थे ?

उत्तर: निर्गुण भक्ति धारा के

2. गुरु ने कबीर को क्या दिया ?

उत्तर: रामनाम

3. चक्रवाक पक्षी के जोडे कब आकर मिलते हैं ?

उत्तर: प्रभात में

4.विरह को कवि ने क्या कहकर पुकारा

उत्तर: सुलतान

5.कबीर के राम का स्वरूप कैसा था ?

उत्तर: कबीरदास हिन्दी भक्तिकाव्य के चर्चित कवि है। वे निर्गुण भक्ति शाख के कवि थे। संत कवियों में उनका स्थान सर्वोपरी है। उनका ईश्वर निराकार और अविनाशी है। वह सर्वव्यापी है। ईश्वर को पाने के लिए वे गरु की सहायता की आवश्यकता पर बल देते हैं। इसलिए कबीर ने गुरु की अनंत महिमा का गान किया है। वे ईश्वर से बढगर ईश्वर के नाम को स्वीकार करते हैं। अत: राम नाम को सबसे बडा माना है।

6. कबीर की भक्ति क्या है ?

उत्तर: कबीर ने भक्ति के केन्द्र में प्रेम को रखा। प्रेम के महत्व को बनाने के लिए वे विरह को सुलतान के रूप में मानते हैं। ईश्वर के साक्षत्कार के लिए निरंतर नाम-भजन,तपस्या, विरह का अनुभव, गुरु का मार्गदर्शन आदि की आवश्कतसा पर कबीर ने जोर दिया। ऐसा, क बीर की भक्ति भावना में कई विशेषताएँ मिलती हैं।

# वह तोडती पत्थर

कवि परिचय

श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हिन्दी साहित्य के महान रचनाकार है। उनका जन्म बंगाल के महिषादल में हुआ। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैा - परिमल, अनामिका, अर्चना, तुलसीदास आदि काव्य संग्रह। अप्सरा, अलका, प्रभावति आदि उपन्यास है। सखी, सुकुल की बीवी, देवी आदि कहानी संग्रह है। इसके अलावा कई रेखचित्र और आलोचना ग्रन्थ इनके दृवारा लिखे गए हैं।

छायावादी युग के कवि, मुक्त छंद के निर्माता, क्रांतिकारी काव्य व्यक्तित्व, आत्मसंघर्ष के कवि जैसे अनेक विशेषण इनके लिए भूषण ह ै प्रगतिवादी चेतना इनकी कविता की एक मुख्य विशेषता है। शोषितों और पीडितों के लिए उनकी कविताओं में स्थान है। भिक्षुक, वह तोडती पत्थर आदि कविताएँ इस दृष्टि से प्रसिद्ध है। वह तोडती पत्थर शीर्षक कविता में कवि की क्रांतिकारी भावना स्पष्ट हुई है।

**शब्दों का अर्थ**

(तले-नीचे, नत नयन-झुकी आँखें, कर्मरत-काम में मग्न, गुरु-भारी, हथौडा-पत्थर तोडने का हामर, प्रहार -मार, तरु मालिका अट्टालिका -विस्तृत व बडा मकान, धूप- सूर्य प्रकाश, दिवा- दिन, तमतमाता -गरम गरम, झुलसती लू- गरम हवा, चिनगी -चिनगारी, प्राय: -शायद, दुपहर- दोपहर, छिन्न तार-टूटा तार, झंकार-गूँज, ढुलक माथे से सीकर -ललाट से पसीना गिरना, लीन होना- मग्न होना)

**कविता का सारांश**

एक औरत इलाहाबाद के पथ के किनारे पत्थर तोड रही है। उसको धूप से आश्वास्त होने के लिए कोई पेड नहीं था। वह यौवनयुक्ता थी, श्यामवर्णी थी और अपने काम में मग्न थी। सामने एक बडा मकान था। वह वृक्ष की शाखाओं जैसी विस्तृत था। उस समय धूप चढ रही थी। गर्मी के दिन थे। असह्य गर्मी थी। वहाँ गरम हवा चल रही थी। गरम हवा सबको पिघल सकती है। धरती रुई जैसे जल रही थी। वास्तव में वह समय मध्यान्ह था। वह औरत पत्थर तोड रही थी।

कवि कहते है कि उस मेहनती औरत ने मुझे देखा। फिर उस मकान की ओर देखा। मार खाने पर भी वह रोयाी नहीं। वह एक सहज सितार जैसी थी। लेकिन उनसे निकलनेवाला स्वर सहज नहीं था। मैंने उस झंकार को सुना। उसके माथे से पसीने ढुलककर गिरे। कवि को लगा कि वह औरत कह रही है -मैं पत्थ्रर तोड रही है।

**विशेषताएँ**

यह कविता निरालाजी की ओर से हिन्दी साहित्य को मिली एक निधि है। इसमें विप्लव का स्वर मुखरित है। कवि ने मजदूर वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति इसमें प्रकट की है। मजदूरों के जीवन की यथार्थ स्थिति इसमें चित्रित हुई है। साथ ही साथ धनवानों पर प्रहार भी किया है। यथार्थ में भारी हथौडा मजदूर वर्ग की शक्ति का प्रतीक है। हथौडे की मार शोषक लोगों पर पड रही है। पत्थर तोडनेवाली औरत श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधि है। अट्रटालिका पूँजीपति शक्ति का प्रतीक है। वर्गविभाजित समाज की दु:स्थिति इसमें अंकित है। पूँजीपति लोग श्रमिकों का शोषण करके सुखी जीवन बिताता है। श्रमिक हमेशा कठिन जीवन बिता रहे हैं। प्रगतिवादी विचारों से प्रभावित यह कविता विषय की दृष्टि से निराली है।

**प्रश्न और उत्तर**

1. निराला किस युग के कवि थे ?

उत्तर: छायावादी युग के कवि है।

2. सरोज स्मृति किसकी कविता है?

उत्तर: निरालाजी की

3.**वह तोडती पत्थर** कविता का मुख्य स्वर क्या है ?

उत्तर: प्रगतिवादी स्वर

4.**भिक्षुक** किस प्रकार की रचना है ?

उत्तर: प्रगतिवादीवादी रचना है।

5. प्रगतिवाद का दर्शन कौन है ?

उत्तर: मार्क्सवाद

6. **वह तोडती पत्थर कविता** में कवि किसके पक्ष में खडे हैं ?

उत्तर: सर्वहारा के पक्ष में

7. **वह तोडती पत्थर** शीर्षक कविता में कवि का दृष्टिकोण क्या है ?

उत्तर: कवि इस कविता के द्वारा वर्गविभाजित समाज का चित्रण करते हैं। गरीबों की दु:स्थिति का कारण समाज का वर्गभेद है। क्रांति के द्वारा ही समाज में परिवर्तन साध्य है। मजदूर वर्ग की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए कवि क्रांति का आह्वान करते हैं। सर्वहारा वर्ग की यथार्थ स्थिति का अंकन कविता में किया गया है।

8.**वह तोडती पत्थर** कविता की मजदूरिन का चित्र कैसा खींचा गया है ?

उत्तर: इलाहाबाद के पथ पर एक स्त्री पत्थर तोड रही है। कडी धूप है। वह यौवन से भरी है। वह श्यामवर्णी है। वह गुरु हथौडे से पत्थर पर मार रही है। उसके सामने बडा मकान सिर उठाकर खडा है। पत्थर पर मारते समय चोट खाने पर भी वह रायी नहीं। वह अपने काम तल्लीन है।

9. पत्थर पर गुरु हथौडे से बार-बार मारने तथा सामने अट्टालिका को दिखाकर कवि क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर: कवि इनके द्वारा वर्गविभाजित समाज में क्रांति का आह्वान करते हैं। असल में स्त्री गुरु हथौडे से पूँजीवादी कठिन शक्ति पर बार-बार मार रही है। अट्टालिका पूँजीपति का प्रतीक है जो गरीबों का खून पीकर बडा हुआ है। दोनों दृश्यों के जरिए कवि समाज की दु:स्थिति दिखाते हैं।

10. इस कविता में चित्रित परिवेश।

उत्तर: दोपहर का समय है। कडी धूप है। सडक के किनारे कोई पेड नहीं है। सबको पिघलानेवाली गरम हवा चल रही है। मजदूरिन के लिए प्रतिकूल वातावरण हैं सामाजिक स्थिति भी प्रतिकूल हैं फिर भी मुँह बन्द करके काम करना पडता है। परिवेश की प्रतिकूलता वास्तव में प्रतिकूल व्यवस्थ की ओर इशारा करती है।

## फसल

### कवि परिचय

कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म सनु 1927 ई. में हुआ। एम. ए. तक की उपाधि प्राप्त की है। सरकारी नौकरी की। आकाशवाणी में काम किया। दिनमान समाचार पत्र का संपादक बने। सन् 1983 ई. में उनका निधन हुआ। सर्वेश्वर जी मानवतावादी थे। शेषितों के प्रति उनको प्रेम था। कवि, कहानीकार, नाटककार आदि रूपों में वे हिन्दी साहित्य में प्रख्यात है। उनकी रचनाओं में मध्यवर्ग का स्वभाव अंकित है। मध्यवर्ग के अहं,चिंतन, हताशा, विश्वास, कुंठा आदि पर उन्होंने विचार किया। उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ है - कुआने नदी, खूँटियों पर टूंगे मनुष्य, क्या कहकर पुकारूँ, बाँस का पुल, गर्म हवाऐं आदि।

फसल कविता में कवि ने एक रचनाकार का कर्म, उसके द्वारा सामाजिक जीवन में परिवर्तन और परिवर्तन से हो रहे परिणाम आदि पर खुलकर विचारा किया हे।

**शब्दो के अर्थ**

हल- परिहार, कुदाल-spade , खुरपी-scissors, फसल- harvest, बीज बानेा-बीज डालना, विरला- rare, सिलसिला-कार्य, उगना-sprout, इठलाएगी- गर्व करेगी, सुनहरी-सुवर्ण, चरन परसना- पैर का स्पर्शन, धरती के नीचे दबे सोएँगे - भूमि के नीचे शांत होकर सोना)

**कविता का सारांश**

एक रचनाकार क्रांति या परिवर्तन की भूमि तैयार करता हैं। उनकी कलम हल,कुदाल, खुरपी के समान है। वह लिख-लिखकर जनता को विप्लव के लिए तैयार कर देता है। पर कवि के परिश्रम का फल उसे नहीं मिलता। कवि क्रांति के बीज बोने के लिए धरती तैयार कर दे सकता है। बीज बोने के लिए हमेशा कोई नहीं आता। कभी ही कोई आता है। वही कवि के परिश्रम का पेषण कर सकता है।

बीज कल उगेगा और बडा होगा, तब तक कवि नहीं जीवित रहेगा। फिर भी फसल गर्व के साथ खडे मिलेंगे। तब कवि की आत्मा स्वर्ण रंगी धूप बनकर वहाँ बरसेगी। वह बीज बोनेवाले के पैरों पर स्पर्श करेगी।

जो फसल काटेंगे वे ही बाद में बीज बोएँगे। तब कवि या रचनाकार जिन्होंने क्रांति के लिए धरती तैयार की थी। वे नहीं रहेंगे। मर चुके होंगे। वे धरती के नहीचे नींद में होंगे ।

**विशेषताएँ**

कवि इसमें क्रांति के लिए रचनाकार की भूमिका स्पष्ट करते हैं। उसकी कलम शक्तिशाली औजार है। कवि ही जनता को क्रांति के लिए तैयार करते हैं। लेकिन क्रांति का फल उन्हें नहीं मिलता है। लेकिन क्रांति में कवि की आत्मा का अंश रहेगा। इसलिए सर्वेश्वर जी कहते है कि जो फसल काटेगा वही फिर उसे बोएगा। इसमें खेती, फसल, औजार आदि के साथ रचना प्रक्रिया को जोडकर देखा गया है। इसलिए कविता में नवीनता आयी है।

## प्रश्न और उत्तर

1: फसल किसका प्रतीक है ?

उत्तर: क्रांति का

2: रचनाकार वास्तव में क्या करते है ?

उत्तर:. क्रांति के लिए भूमि तैयार करते हैं।

3. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं का मूल स्वर क्या है ?

उउत्तर: मानवतावादी स्वर

4. क्राति लाने में रचनाकार की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: लेखक की कलम औजार है। जैसे किसान खेती करने के लिए धरती तैयार करते हैं वैसे रचनाकार अपनी रचनाओं के दृवारा क्रांति के लिए भूमिका तैयर करते हैं। लेकिन कवि क्रांति नहीं करते है। क्रांति करने के लिए कोई आएगा और कवि द्वारा तैयार की गयीर धरती का उपयोग करेगा। कवि का आत्मांश क्रांति के परिणाम में अवश्य रहेगा।

5. रचनाकार की नियति क्या है ?

उत्तर: रचनाकार क्रांति की भूमिका तैयार करने के बाद समय के पर्दे के पीछे चले जाते हैं। बीज बोने के लिए दूसरा आएगा। बाद में फसल काटे जाएँगे और फिर बीज बोए जाएँगे। रचनाकार की आत्मा फसल पर छायी रहेगी। ऐसे, क्रांति के नैरंतर्य के दौरान रचनाकार धरती के नीचे अखण्ड निद्रा में होंगे।

# बीस साल के बाद

**कवि परिचय**

धूमिल का असली नाम सुदामा पाण्डे है। इसका जन्म उत्तर प्रदेश के वारणसी जिले में हुआ। बचपन में पिता मर गए। बहुत कठिनाइयों के बीच स्कूली शिक्षा पूरी हुई। वारणसी के साहित्यिक समुदाय के बीच संपर्क में रहे और बहुत जल्दी ही अपनी कवि प्रतिभा दिखा दी गयी। धूमिल की कविताएँ राजनीतिक है। व्यंगय, विद्रोह और आक्रोश उनकी कविताओं में आए हैं। वे जनतंत्र के खोखलेपन पर कटु आलोचना करते हैं। सामाजिक वास्तविकताओं को खुलकर दिखाते हैं। आम लोगों के पक्षधर कवि राजनतिक विषमताओं के अंतरंग सत्यों का उद्घाटन करते हैं। संसद से सडक तक, बांसुरी जल गई, कल सुनना मुझे, सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र आदि उनकी बहुचर्चित कव्य रचनाएँ हैं। बीस साल बाद शीर्षक कविता राजनीतिक व्यंगय है।

**शब्दों का अर्थ**

(पावस वर्षा-वर्षाकला, ठोस-दृढ , सैलाब-बाढ, टालना-दूर करना, सब्र-धैर्य, मिजाज-प्रकृति, बेमानी-धोखा, वक्त-समय, आंकना-अनुमान करना, संत-संन्यासी, सुनसान-शून्य, पहिया-चक्र, ढोना-वहन करना )

**कविता का सारांश**

भारत को आजादी मिलकर बीस साल हो गए। फिर भी आजादी के सपने साकार नहीं हुए। जल्दी ही जनता को मोहभंग हुआ। कवि कहते हैं कि आजादी के बीस साल बाद भी मेरी आँसू भरी आँखें लौट आयी हैं। इन आँखें से मैंने जीवन की भीषण स्थिति देखी थी। स्वतंत्रता के बाद भी स्थिति में परिवर्तन नहीं आया हैं।

बीस साल के बाद मैंने खुद एक प्रश्न पूछा कि जानवर बनने के लिए कितनी सहनशीलता चाहिए। मुझे कोई उत्तर नहीं मिला। आजादी के पहले जो सपने देखे गए थे वे सब आज प्रश्न बनकर खडे हैं। उत्तरहीन प्रश्नों के पीछे जाना निरर्थक है। कोई प्रयोजना नहीं है।

दोपहर का समय है। फिर भी सारी दूकानों और घरों पर ताला लगाया गया है। दीवारों पर गोलियाँ लगने से उत्पन्न निशानें हैं। सडक पर जूते बिखरे पडे हैं। इनसे पता चलता है कि कोई दुर्घटना हुई। गर्व से फटफटाते भारत के नक्शे पर गाय ने गोबर कर दिया है। लेकिन यह समय, दुर्घटना के कारण भाग गए लोगों की लाज को आंकने का नहीं है। सन्त और सन्यासी में कौन भारत का दुर्भगय है, यह पूछने का नहीं है।

वापस जाकर नष्ट हुए जूतों में पैर डालने का भी समय यह नहीं है। बीस साल के बाद भारत की धरती पर एक चोर के समान गुजरते हुए मैं स्वयं प्रश्न करता हूँ -क्या आजादी तीन थके हुए रंगों का नाम है जिन्हें एक पहिया वहन करता हैं। क्या इसका कोई विशेष अर्थ होता हे ?

बिना कोई उत्तर पाकर मैं फिर चुपचाप आगे बढता हैं।

**कविता की विशेषताएँ**

यह कविता राजनैतिक व्यंगय की कविता है। आजादी के बीस साल के बाद भी देश की स्थिति नहीं सुधरी है। कवि इससे चिंतित है। कवि के प्रश्न अपने समय में भी प्रासंगिक है। प्रश्नों में ही देश की

दुरवस्था अंकित हुई है। घर और दूकानें के बन्द रहने का चित्र, दीवार पर गोलियों के निशान, सडक पर बिखरे जूते आदि देश की यथार्थ स्थिति बताते हैं। भारत के नक्शे पर गाय का गोबर करना इस देश की पतित स्थिति दर्शाता है। अंत में कवि पाते हैं कि प्रतीक्षा की राष्ट्रीय पताका निराशा की प्रतीक बन गयी है। देश अब भी गठिन समय से गुजर रहा है। बीस साल के बाद भी जनता का सपना साकार नहीं हुआ है।

**प्रश्न और उत्तर**

1. धूमिल का असली नाम क्या है ?

उत्तर : सुदामा पाण्डेय

2. बीस साल के बाद कवि किसको किसको लक्ष्य करता है ?

उत्तर: आजादी मिलने के बीस साल बाद

3. बीस साल बाद भारत को क्या हुआ ?

उत्तर: बीस साल के बाद भी भारत की दुस्थिति में परिवर्तन नहीं आया।

4. भारत के नक्शे पर गाय ने क्या किया?

उत्तर: गाय ने गोबर कर दिया।

5. तिरंगे झंडे की स्थिति बीस साल के बाद कैसी है ?

उत्तर: थके हुए तीन रंग जिन्हें एक पहिया ढोता है।

6. भारत की भयानक स्थिति को कवि ने किस प्रकार चित्रित किया है ?

उत्तर: हर तरु ताले लटक रहे हो। दीवारों पर गोलियों के निशान पडे हुए हैं। सडकों पर जूते बिखरे पडे हैं। फटफटाते हुए भारत के नक्शे पर गाय ने गोबर कर दिया है। आजादी के समय जो आतंक देश में फैला था वह आज भी जारी है। भारत का नक्शा आज भी खतरे से बाहर नहीं है।

7. तिरंगे झंडे की यह दुस्थिति क्यों है ?

उत्तर: हमारा राष्ट्रीय झण्डा आशाओं और सपनों को साकार करने की प्रतीक्षा का प्रतीक था। लेकिन बीस साल के बाद भी स्थिति बदली नहीं। शासक क्रूर रहे हैं। निराशा सर्वत्र व्याप्त है। लोग भयभीत हैं। दमन की नीति चल रही हा वास्तव में धर्म और नीति से रहित देश में तिरंगा झंण्डा फीके रंगों का वहन करता है जो धर्मचक्र के लिए भार बना पडा है।

# लुहार

**कवि परिचय**

अशोक वाजपेयी मध्य प्रदेश के सागर जिले में पैदा हुए। आई. ए. एस. पास होकर प्रशासनिक सेवा में कार्य करते रह। अनेकों मासिक पत्रिकाओं का संपादन किया। हिन्दी में विमर्श और व्याख्य को अलग दिशा दी। अपनी कविताओं में वाजपेयी बोद्धिकता का संचरण कराते हैं। वे जीवन के प्रति विश्वास करते हैं। अपने समय की वास्तविकताओं को कविता में उतारते हैं। नये मूल्यों को प्रस्तुत करते हैं। उनकी प्रमख रचनाँ हैं - शहर अब भी संभावना है, एक पतंग अंत में, तत्पुरुष, कहीं नहीं वहीं आदि काव्य संकलन है।

शब्दों का अर्थ (भट्टी- चूल्हा, ज्वालामुखी- अग्नि पर्वत, साँचा-ढाँचा, उंडेलना -डालना, हिस्सा-अंश, सदी-शताब्दी, चके-चक्र, गँडासा- axe, भाप -steam, कडाही-frying pan, रफू कर देना- सुराग बन्द करना, चाकू-knife, पेंदी -नीचे का भाग , आग- अग्नि, बुझ जाना- exhaust,घन-big hamour,आखिरी-अंतिम)

**कविता का सारांश**

मेरी भट्टी में एक ज्वालामुखी ही बह रही है। मैं जिस पिघले लोह को साँचे में डालता हूँ वह उस लावे का अंश नहीं है जो इस शताब्दी में असुरों, देवों ओर मनुष्यों ने दुनिया में बहाया है। मेरी भट्टी में अधिकांश चाकू तैयार होते हैं। कभी - कभी कुल्हाडी । लेकिन हमारे समय की भट्टी में आदमी, पेड, पशु-पक्षी सबको भाप कर देता है। अर्थात् सबका नाश हो जाता है। मैं कभी पिघले हुए लोहे से कडाही का द्वार बन्द कर देता हूँ। कभी बाल्टी के नीचे के द्वार बन्द करने के लिए उपयोग करता हूँ। लेकिन आज लोग लोहे को या लकडी को दुनिया की भलाई के लिए उपयोग नहीं करते जैसे लुहार या बढई करता हैं। आज सारी की सारी प्राकृतिक संपत्तियों का अंधाधुंध शोषण हो रहा है। इस सदी के समाप्त होने के पहले मेरी भट्टी शायद बुझ जाएगी और लोहा भी अपने सच में पिघलकर सपने में बदल जाना छोड देगा। फिर भी मैं इस सदी के एक कठोर सत्य को पीटकर पीटकर एक नए सपने को रूप दे रहा हूँ। शायद यह एक लुहार का अंतिम दिन होगा। शेष कार्य सुनारों और शिल्पियों के द्वारा संपन्न किया जा सकता है या न भी किया जा सकता है ।

**विशेषताएँ**

इस कविता में लुहार सृजनकर्ता का प्रतीक है। वह समाज के सुखी जीवन के लिए निर्माण में रत है। लेकिन वर्तमान दुनिया की स्थिति काफी कठिन है। निर्माण कभी कभार विनाश बन जाता है। भट्टी की लावा , चाकू और कुलाडी का रूप धारण करती है। लेकिन इसी लावे से विनाश भी संभव है जैसे सुरों या असुरों या मनुष्यों ने किया है। लुहार अपनी भट्टी के द्वारा नवनिर्माण करना चाहता है। साथ ही साथ दिशाभ्रष्ट दुनिया के प्रति वह चिंतित है। कवि कहते हैं कि हो सकता है कि इस सदी के खतम होने के पहले ही मेरी भट्टी बुझ जाए। लेकिन कवि आशावादी है। वे सुनारों - सुतारों से समाज के नवनिर्माण की प्रतीक्षा करते हैं। ऐसा, यह कविता अपने समय के संकट और सुन्दर भविष्य को एक साथ महसूस करने देती है। वास्तव में यह वाजपेयी जी का, वर्तमान समाज की असली स्थिति की सही पहचानन है।

**प्रश्न और उत्तर**

1. **लुहार** किसकी रचना है ?

उत्तर: अशोक वाजपेयी जी की

2. लुहार की भट्टी में क्या-क्या बनते हैं ?

उत्तर: चाकू,कुलहाडी आदि

3. लुहार लोहे से क्या-क्या बनाते है ?

उत्तर: लुहार लोहे से चाकू,कुल्हाडी आदि बनाता हैं। वह कभी कडाही के छेद को बन्द करता है, चाकू के हत्थे डालता है और बाल्टी के पेंदे के छेद को बंद कर देता है।

4. पिघला लोहा और साँचे से कवि क्या मतलब कर देते हैं ?

उत्तर: पिघला हुआ लोहा समय का सत्य है। साँचा, समाज का यथार्थ है। लोहा नवनिर्माण का सपना देखता है। लेकिन साँचा परिवर्तन को स्वीकारता नहीं है। लेकिन कवि आशावादी है। वे हमेशा समाज में कर्मरत है। आनेवाली पीढी को वह समय की कामनाआं को सौंप देता है कि वह उसको साकार करें।

5. लोहे के विनाशकारी रूप को कवि कैसे प्रस्तुत करते है ?

उत्तर: लोहा पिघलाकर मनुष्य के लिए उपयोगी चीजों के अनेकों आविष्कार किए गए हैं। यही लोहे विनाशकारी युद्ध सामग्रियाँ बनाने के लिए उपयोग किए जा सकते हैं। मानव ने मानव के बीच लोहे को सर्वनाश करनेवाले हथियार के रूप में इस्तेमाल किया।

6. लुहार क्या आशा करता है ?

उत्तर: लुहार कामना करता है कि लोहे का सदुपयोग हो जाए। इसके लिए वह लगातार गुरु हथौडे से लोहे को पीट-पीट कर तैयार करता रहता है। वह मानता है कि उसका सपना बाद में सुनार और शिल्पि के द्वारा साकार होगा।

# मैं मरने से नहीं डरता

**कवि परिचय**

चन्द्रकांत देवताले मध्यप्रदेश के **बेतूल** जिले के **जौलखेडा** गाँव में पैदा हुए। सन् 1960 ई. में हिन्दी साहित्य में एम. ए. किया और सन् 1984 ई. में मुक्तिबोध पर पी .एच. डी. मिली। शिक्षा विभाग में काम किया और लेखन कार्ये भी करते रहे।

देवताले हिन्दी के समकालीन कवि हैं। उनकी कविताओं में आधुनिक मनुष्य की अनेकों समस्याओं का चित्रण हुआ है। मनुष्य के आंतरिक और बाह्य जीवन को युगीन त्रासदीय स्थिति में रखकर वे देखते हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - हड्डियों में छिपा ज्वर, दीवारों पर खून से, भूखण्ड तप रहा है, पत्थर की बेंच, उजाड में संग्रहालय आदि।

**शब्दों के अर्थ**

(बेवजह - बिना कोई कारण के, संजोए - जमाकर रखना, जासूस- रहस्य पुलीस, तहकीकात- रहस्य खोज, बखूबी- पूर्ण रूप से, नियामत- भाग्य, उधार -ऋण, आडे -बाधा, इज्जत-गौरव, हरकत-कार्य या कर्म, साण्ड- बैल, विस्थापित - अपनी जमीन से निष्कासित, जख्म- चोट लगा हुआ, गूँगा- बोलने में असमर्थ, कूडेदान -कचरा पेटी, नापजोख- मूल्य का निर्णय करना, थकीन -आश्वस्त, रौंद - पैर से मारकर दबा देना, नब्ज -स्पंदन, नह्न्नीं- बहुत छोटा, थामना-पकडकर सुरक्षित रखना, नफरत- घृणा, तारीफ-प्रशंसा, हक-अधिकार)

**कविता का सारांश**

कवि कहते हैं - मैं मरने से नहीं डरता हूँ , लेकिन बिना कोई कारण के मरने का आग्रह भी नहीं हैा मैं स्वतंत्र व्यक्ति हूँ। मैं किराए पर लिए गए संसार में नहीं रहता हूँ मेरा अपना समय ऋण में नहीं लिया गया है। मैं किसी को अपनी ओर आकर्षित करना नहीं चाहता हूँ। किसी की सस्ती और सतही मुस्कुराहट से मैं आकर्षित भी नहीं हूँ।

मैं वेश्याओं का आदर करता हूँ, पर आदरणीयों की वेश्याओं जैसा व्यवहार देखकर मैं गुस्से से काँपता हूँ। मुझे उनकी भाषा अच्छी तरह मालूम है जो जख्मी और गूँगे हैं। मैंने भद्र लोगों के द्वारा जिन्दगी और कविता पर किए गए विमर्श को कूडेदान में फेंक दिया। मेरे भाग्य में यही अच्छा रहा कि आग और गुस्सा हमेशा मेरे साथ रहे। मैं ने घृणित युद्ध में शामिल हुए लोगों पर कभी विश्वास नहीं किया और उपदेश से तंग करनेवालों को नहीं माना। वे उपदेश के द्वारा नन्हीं खुशियों को दबा रहे हैं जिन खुशियों का जन्म अभी तक नहीं हुआ।

मैं अपने शब्दों को पत्थरों की तरह हवा से टकराने के लिए लायक बनाऊँगा। मैं रोगी की शिराओं को उत्तेजित करके उन्हें नया जीवन दूँगा। मैं जानता हँ कि अंतिम संस्कार के लिए तीन बाँस, चार आदमी और थोडी आग काफी है। इसलिए मैं मृत्यु से नहीं डरता हूँ और बिना किसी उद्देश्य से शहीद भी नहीं होता।

मैं ऐसा जीना नहीं चाहता हूँ कि हर कोई मुझे भला कहे। सारे लोगों की प्रशंसा करके अगर मैं जीऊँ तो मेरे लिए कोई शत्रु नहीं होगा। इस बात को मैं बडी बात नहीं मानता हूँ।

**विशेषताएँ**

कवि इसमें बिना कोई लक्ष्य की जिन्दगी जीनेवालों की आलोचना करते हैं। जीने के लिए कोई तर्क होना चाहिए। हमारे समाज में आज लोग सर्वत्र मुखौटे पहनकर चलते हैं। सच्चाई कहीं भी नहीं है। भद्रता सिर्फ बाहर है। अंदर वेश्या का स्वभाव जिन्दा रहता है। कविता, समाज में फैले दुराचारों को खुलकर दिखाती है। जीवन निस्सार है। निस्सार जीवन को सार बनाने के लिए भला करने का आह्वान है यह कविता। अन्यथा जीवन सिर्फ जन्म-मृत्यु के बाहर कुछ नहीं होता है। जीवन की अस्साराता को कवि तीन बाँस, चार आदमी और थोडी आग कहकर स्पष्ट करते हैं।

**प्रश्न और उत्तर**

1. मैं मरने से नहीं डरता कविता का रचानाकार कौन है ?

उत्तर : चन्द्रकांत देवताले

2. कविता में किससे नहीं डरने की बात कही गयी है ?

उत्तर: मरने से नहीं डरने की

4. कवि का, मृत्यु के प्रति तर्क क्या है?

उत्तर: कवि बेवजह मरना नहीं चाहता है।

5.कवि किन्हीं लोगों से विश्वास नहीं करते हैं ?

उत्तर: जो घृणित युद्ध में शामिल है और सुभाषितों के द्वारा दुखियों को तंग कर रहे हैं।

5. वेश्याओं के प्रति कवि का रुख क्या है ?

उत्तर: कवि कहते हैं कि वेश्या सचमुच अपने चरित्र से न्याय करती है। पर कुछ लोग होते हैं, वे बाहर भद्र दीखते हैं और अन्दर वेश्या से भी घृणित है। आज लोग अपने असली मुख दिखाते नहीं हैं।

6. जीवन की निस्सारता को कवि कैसे प्रकट करते हैं ?

उत्तर: कवि कहते हैं कि जीवन निस्सार है। वह तीन बाँस, चार आदमी और थोडी आग में समाप्त होनेवाला है। इसलिए कवि का आह्वान है कि लोग भले के लिए जिएँ।

7. झूठी प्रशंसा के प्रति कवि की राय क्या है ?

उत्तर: लोगों की यह धारण बन गयी है कि सभी आपस में प्रशंसा करें ताकि कोई किसी का शत्रु न बने। झूठी तारीफ असल में सबसे बडा शत्रु है।

# एक रात की जिन्दगी

**कवि परिचय**

कवि लीलाधर जगूडी समकालीन कविताओं के जाने माने व्यक्तित्व है। उनका जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ। उन्होंने एम ए पढने के बाद सैन्य में काम किया ं बाद में उसे छोडकर साहित्य क्षेत्र में आए।

अपनी कविता में वे अपने समय के संकट को बताते हैं। उनकी कविताओं में आग की तीक्ष्णता और क्रांति का संकल्प है। अनेक चित्र, बिम्ब आदि उनकी कविताओं की समृद्धि है। प्रकृति और जीवन के बीच कविता की स्थितियाँ वे तलाशते हैं। उनकी रचनाएँ हैं- शंखमुखी शिखरों पर नाटक जारी है, इस यात्रा में अनुभ के आकाश में चाँद आदि। अनुभव के आकाश में चाँद को उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला है।

**शब्दों के अर्थ**

(पारदर्शी - transparent, गहराई - depth, ओस -तुषार, समा जाना- व्याप्त होना, उजाला-प्रकाश, तय करना- निश्चित करना, मसाफिर- यात्री, झिलमिला-चमकते, भूरे रंग- brown color, आभा-शोभा, घनी रात- अमावासी, अधमर- आधा मरा, धारियाँ -रेखाएँ , उद्विगनता-दुखी, काई - alga, सांवल-श्यामल, नसीब-भाग्य, गेंदे-एक प्रकार का पीला फूल, उर्वर-fertil, सिरे-छोर, परछाई- छाया, पीछा करना- to follow, संपुट- हथेली, कमाल करना- अद्‌भुत दिखाना)

**कविता का सारांश**

एक रात भर का जीवन चार दिन के जीवन से कभी कम नहीं है। दुनिया के आधे भाग में जब अंधकार है तो आधे में दिन है। कवि इस का नींद और भूख कहकर पुकारते है। रात का आकाश नक्षत्रों से भरा है। कवि की भावना में वह समुद्र के समान गहराईवाला और पर्वतों के समान ऊँचाईवाला है। पर्वत से उतर आकर एक रात समुद्र में तैरती है। दूसरी एक रात ओस कणों के समान नीचे आती है। एक रात आकाश से उतर आकर पाताल की ओर चली जाती है। एक तारीख वास्तव में एक रात से शुरु होकर दूसरी रात में समाप्त होती है। कवि की भावना में रात के विभिन्न रूप सजीव है।

इसी प्रकार, एक रात आँखों से मन की ओर आती है। वह एक दिन में यात्रा करती है। कई प्रकार से आनेवाली रात प्रभात तक बिलकुल रहती है। लेकिन सारी रात एक समान नहीं है। रात सबको एक समान दीखती है। क्योंकि रात की आँखें को दिन की आँखों के समान देखने की शक्ति नहीं हैं लाखें न्झिरों से तुषार कण गिरते हैं। वे आपस में टकराकर बिखेर जोते हैं। कवि की भावना में वे यारियों के समान हैं।

रात में रंग फीका रहते हैं हरा रंग रात में पीला दिखता है अर्थात् अन्धकार के फैल जाने के बावजूद रेग जीवित रहता हैं कवि की भावना में रंगा को रात जीने के लिए देती है। धरती के जन्म होने तक रात नहीं पैदा हुई थी। वास्तव में रात के लिए धरती पैदा हुई। रात कई रूपों में प्रकट होती हैं कभी वह चाँदिनी में खिले पीले रंग के फूल के समान है तो कभी खेतों में बिखेर दिए यूरिया खाद के समान हैं कभी वह ढेर के गोबर-सी नभ का स्पर्श करते हुए दिखाई पडती है। कभी दिन, रात के कुछ कीडों को खाता है। उस समय रात एक फीक पडे स्तूप जैसा दीखती हैं

दिन के आरंभ में और अंत में एक रात का अस्त्वि है। दो रातों के बीच दिन एक फल के समान रहता है और एक पराग के समान उड जाता है। दिन में भी रात, छाया के समान हमारे साथ रहती हैं हरी पत्तियों के बीच रात छिपा रहती है। दिन भर,तारे से भरपूर रात, छाया बनकर हमारा पीछा करती है।

विशेषताएँ

रात इस कविता का नायक है। रात के विविध भाव, रूप, रंग आदि कविता में प्राण पाते हैं रात सर्वस्व है। उसका सान्निध्य जो संसार में है उसको प्रकट करने में कविता सहायक होती है। कवि की भावना में रात का रूप विशेष बनकर आता है। रात में सृष्टा का रूप , स्थिति का रूप और संहार का रूप कवि देखते हैं। रात कभी हमें दोडता नहीं है। वह दिन में भी हमारे पीछे आती हैं दिन के जीवन को, रात पूर्ण करती हैं इस प्रकार, यह कविता रात का चित्र प्रस्तुत करती हैं अनेकों प्रतिमानों से कवि रात को नापते हैं और रूप देते हैं। यह कविता अपनी प्रयोगशील गति में सफल अभिव्यक्ति है ।

**प्रश्न और उत्तर**

प्रश्नः रात की जिन्दगी किसकी रचना है ?
उत्तर : लीलाधर जगूडी
प्र.भूख और नींद से कवि का तात्पर्य क्या है ?
उ.भूख दिन है और नींद रात है।
प्र. तारीख कहाँ से आरंभकरती है ?
उ. रात से
प्र.तारीख का अंत कहाँ जाकर होता है ?
उ. रात में जाकर
प्र. रात को कवि ने क्यों समतल कहा ?
उ.रात के लिए सबकुछ समान है। जब अंधकार छा जाता है तब दुनिया एक ही स्वरूप याने रात में बदल जाता है। अतः रात में सारा रूप समान दीखते है। अतः रात में सबकुछ समान दिखाई पडते है।

प्र. रात में रंग की स्थिति क्या है ?

उ. रात में रंग फीका पडता है और वह दूसरे रंग में दिखाई देता है, जैसे हरा रंक पीला और फीका दीखता है। वास्तव में रंग रात में जिन्दा रहता है।

प्र.चाँदनी में रात कैसे दिखाई पडती है ?

उ.चाँदनी के सामने रात काले स्तूप के समान दिखाई देती है। रात चाँद को आदर कर वन्दना करती दिखाई पडती हैं

प्र. भूमि का आविर्भाव क्यों हुआ ?

उ. रात के लिए

प्र. भूमि का आविर्भाव क्यों हुआ ?

उ.रात के लिए

प्र. कब रात नहीं थी ?

उ.भूमि के पैदा होने के पहले

प्र. रात कब हमारी छाया बनकर पीछे आती है ?

उ. दिन में

प्र. रात का स्वरूप दिन में किस प्रकार है ?

उ. रात हमारी छाया के रूप मे और जंगल में अंधकार बनकर दिन में रहती है।

## नए इलाके में

कवि परिचय

अरुण कमल हिन्दी कविता के जाने माने हस्ताक्षर हैं। बिहार के नासरीगंज में उनका जन्म हुआ। प्रगतिशील चेतना की कविता उनकी कलम से लिकली है। उनकी कविता में मानव जीवन ओर समाज की अनेकों विसंगतियों की अभिव्यक्ति हुई है। समाज की संवेदनहीनता के प्रति जागरूक है। भाषा और शिल्प के तौर पर उनकी कविताएँ साहसिक और प्रयोगशील है। उनकी रचनाएँ -अपनी केवल धार, सबूत, नए इलाके, पुतली में संसार आदि। भरत भूषण अग्रवाल पुरस्कार और साहित्य अकादमी पुरस्कार और साहित्य अकादमी पुरस्कार उनको मिले हैं।

**नए शब्द और अर्थ**

(इलाका- प्रदेश, बसते- आबादीवाला, अक्सर- साधारणतय, निशान- संकेत, ताकना-देखना, पीपल का पेड- banian tree, ढहा हुआ-टूटा हुआ, फाटक -द्वार, इकमंजिला- एक ही मंजिलवाला, घट जाना- कम हो जाना, वैशाख- एक महीने का नाम, भाद- और एक महीने का नाम, खटखटाना - knock, टुकडा- piece, बाएँ मुडना-left turn,लोहा - iron धोखा देना- cheat)

**कविता का सारांश**

कवि कहते हैं कि इस नए इलाके में राज नए मकान बनते जा रहे हैं। अत: मुझे अपने घर का रास्ता मैं भूल जाता हूँ। घर जाने की पुरानी निशानें मुझे धोखा दे रही है। निशाने के रूप में पहले एक टूटा घर, खाली जमीन, पीपल का पेड आदि रहते थे। लेकिन हर बार घर आते समय मैं कभी अपने घर के दो घर आगे भी आगे भी जाते हैं या एक घर पीछे आकर रुक जाता हूँ। अनेकों नए निर्माण हो रहे हैं जिनक कारण पुराने निशानों पर मैं विश्वास कर नहीं पा रहा हूँ।

अब मेरे घर का पता करने के लिए एक ही उपाय है कि हर एक दरवाजे पर जाकर पूछें-क्या यह मेरा घर है? घर का पता करने के लिए ज्यादा समय नहीं है। जल्दी बारिश होगी। ऊपर खडे कोई मुझे देखकर जल्दी पहचान लें।

विशेष

अस्वाभाविक परिवर्तन दुनिया मे चल रहे हैं। हमारा समय बहुत कठिन बन गया है। हम अपना घर तक पहचान नहीं सकते हैं। पुराने चिन्ह और निशान अप्रत्यक्ष हो रहा है । स्मृति में जो घर का रास्ता रहता था वह आज नहीं नष्ट हुआ है। वास्तव में हम स्मृति के कारण जी रहे हैं। अब स्मृति का कोई उपयोग नहीं है। स्मृतिहीनता सबसे बडा अभिशाप है। पिछले दस-बीस सालों में जो परिवर्तन आया है वह सदियों से नहीं हो पाया था। परिवर्तन झलांग मारता है। इस ज्वलंद समस्या पर कविता टिप्पणी करती है।

**प्रश्न और उत्तर**

प्रश्न: नए इलाके की रचना किसने की ?

उत्तर: अरुण कमल ने

प्र. कवि क्यों अपने घर का रास्ता भूल गए ?

उ. हर रोज नए निर्माण हो रहे हैं। इन्हीं कारणों से कवि रास्ता भूल गए।

प्र. कवि के लिए घर पता करने के लिए कौन-कौन से निशान सहायक थे ?

उ.पीपल का पेड, खाली जमीन, जीर्ण घर आदि

प्र.घर पहचानने के लिए कवि ने क्या उपाय ढूँढा ?

उ. हर दरवाजा खटखटाकर पूछें कि क्या यह मेरा घर है।

प्र. यादों पर कवि विश्वास नहीं कर पाते, क्यों?

उ. क्योंकि चारों ओर अस्वाभाविक परिवर्तन हो रहा है।

प्र.कविता किस ज्वलंद समस्या पर संकेत करती है ?

उ. तेज और अस्वाभाविक या अप्राकृतिक परिवर्तन के कारण उत्पन्न मनुष्य की निस्सहाय अवस्था की ओर संके करती है।

# औरतें

**कवि परिचय**

कवि उदयप्रकाश उत्तर प्रदेश से हैं । वे समकालीन कविता के प्रमुख कवि हैं । कविता, लेख, अनुवाद साक्षात्कार आदि साहित्य शाखाओं में अपना रचनाकार व्यक्तित्व उन्होंने प्रकट किया है । उनकी काव्य शैली ललित होते हुए भी गंभीर अवश्य है । उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं- नेलकटर, पॉल गोमरा का स्कूटर, दरियायी घोडा आदि । औरते उनकी स्त्री विमर्शी कविता है ।

**नए शब्द और अर्थ**

(महंगाई भत्ता - Dearness Allowance, लाचार -विवश, मीमा- मेमो, सुहागिन-सौभाग्यवति, करवचौथ- विशेष व्रत, चिल्लाना -जोर से रोना, बेबस -विवश, महीन आवाज-मृदु स्वर, तनख्वाह- वेतन, चूमना- चुम्बन करना, तवा- frying pan, कडाही- pan , खोलता-उबलता, बयान- विवरण, किसमत- भाग्य, कोयला- coal , कसम खाना -शपथ लेना, अतीत- बीता समय, धधकता -प्रज्वलित, सन्नटा- मौन, खातिर -के लिए, खो गया -नष्ट हुआ, जेवर- आभूषण, बाल काढे विना- बाल संवारे बिना, अड्डा -स्टेशन, बिलकु- पूर्ण रूप से, तडके- प्रभात में, झोले में -थैली में , तेजाब- आसिड, माँजना- साफ करना, तादाद- वेतन, थाना-स्टेशन, छिटककर- बिखेरकर, छूती हुई-स्पर्श करके, समूचे- पूर्णतः, इनकार करना-निषेध करन, खोजना- अन्वेषण करना)

**कविता का सारांश**

कवि कहते हैं कि एक स्त्री अपने पर्स से पैसा देकर बस का टिकट ले रही है । उसका कुछ समय पहले बलात्कार हुआ था । उसी बस में कुछ अपने वेतन और महंगाई भत्ते के बारे में बोल रही है ।

एक स्त्री जो अपने सौभाग्य -जीवन के लिए व्रत लेकर बैठती है । लेकिन वह अपने पति या साँस द्वारा मारे जाने की आशंका से एकदम रोती है । अपने पति की प्रतीक्षा में और एक स्त्री अपने बालकणी में बैठती है ।उसका पति पियक्कड है । वह स्त्री यह जानती है कि अपने समान एक विवश स्त्री के पास से उसका पति आते हैं ।

संदेह और असुरक्षा से पीडित एक नाी अपने पति से मार खान के पहले मुदु स्वर में पूछती है - आपके वेतन में आधा पैसा कहाँ खर्च किया और एक अपने बच्चे को नहलाता समय रोती है और उसे चूमकर पूछती है -क्या तुम बडे होकर मेरी रक्षा के लिए करोगे ? एक का हाथ तवे से जला, और दूसरे का शरीर उबले तेल से जला और तीसरी का देह कोयले से सौ प्रतिशत जला । आस्पतालों में वह किसी के ऊपर भी आरोप नहीं लगाती है । नाक से निकल रही खून पेंछकर कोई स्त्री पति से बोल रही है- मैंने किसी से प्यार नहीं किया था । और एक ने सीलिंग फेन पर अपना जीवन समाप्त किया । क्योंकि उसक प्रेमी ने उसके द्वारा लिखी चिट्ठि और फोटो दूसरे को दिखाकर उसे अपमानित किया था ।

इसी तरह एक स्त्री पागल बनकर स्वयं बोलती हुई सडक पर चल रही है जैसे किसी को फोन कर रही हो । बस स्टेशन पर खडी औरतें पूछ रही है - हम किस बस में चढेगा और कहाँ आएँ । और एक नारी पराजित होकर पति से विनती कर रही है कि आप मेरे ऊपर कुछ भी करें, पर मुझे जीने दीजिए । एक औरत का शव सुबह पार्क में पडा मिला । उसके पास डेढ साल का बच्चा बैठकर रो रहा था । उसकी थैली में खली पडी दूध का बोतिल ओर एक प्लास्टिक ग्लास थे । और आवज करती गेंद भी था ।

एसिड से आक्रमण किए जाने पर एक स्त्री की एक आँख नष्ट हुई । वह आश्वस्त इसलिए है कि उसकी एक आँख बच गयी है । तन्दूरी की भट्टी पर जलते समय एक स्त्री अपनी उँगलियाँ यह जानने के लिए हिला रही थी कि

बाहर कितना अंधेरा है। एक औरत वर्तन माँज रही है, एक कपडा साफ करती है, एक जो अपने बच्चे को बोरे पर लिटाकर सडक का काम कर रही है। एक औरत फर्श साफ कर रही है तो दूसरा टी वी चैनल पर फैशन परेड देख रही है। कोई औरत यह न्यूस सुन रही है कि संसद में उसके वर्ग की संख्या में वृद्धि की जाएगी।

आखिर कवि कहते हैं कि अनैतिक भ्रूण हत्या इस देश में चल रही है। भ्रूण में भी उतरती है हत्यारी कटार।

## विशेषताएँ

कविता स्त्री पर हो रहे अन्याय पर कटु आलोचना करती है। स्त्री सब कहीं असुरक्षित है। अपनी पहचान से वह वंचित है। पुरुष के आधिपत्य चरित्र पर कविता यह हमला करती है। वस्तुत: यह कविता नारी जीवन की दर्दनाक कथा कहती है। कति नारीवाद को यथार्थत: प्रस्तुत करते हैं।

## प्रश्न और उत्तर

प्रश्न: औरतें किसकी कविता है?

उत्तर: उदय प्रकाश

प्र. सौभाग्यवति बनने के लिए व्रत लेनेवाली औरत को क्या होती है ?

उ. अपने पति या साँस से मारे जोने का डर है। इसलिए वह एकदम चिल्लाती है।

प्र. बालकणी में बैठी औरत किसकी प्रतीक्षा करती है ?

उ. अपने पियक्कड पति की प्रतीक्षा करती है। वह उसक जैसी एक दूसरी औरत के घर से आता है।

प्र. संदेह का शिकार बनी स्त्री मुदु स्वर में पति से क्या पूछती है ?

उ.वेतन के आधे पैसे कहाँ गए।

प्र. बच्चे को नहलानेवाली स्त्री बच्चे से क्या प्रतीक्षा करती है ?

उ. सुरक्षित जीवन की

प्र. जलायी गयी नारी आस्पताल में क्या बयान देती है ?

उ.उसकी इस स्थिति के लिए कोई जिम्मेदार नहीं है।

प्र. किस नारी ने आत्महत्या की ?

उ.जिस पुरुष से उसने प्यार किया था उसने फोटो और उसके द्वारा लिखे गए खेतों को दूसरों को दिखाकर उसे अपमानित किया। अत: उसने आत्महत्या की।

प्र. बस स्टेशन पर खडी औरतें कौन है ?

उ. वेश्यायें

प्र.पति में पडे मिले शव के पास क्या क्या थे ?

उ. उसका डेढ साल का बेटा जो रोता है, दूध की खाली बोतल, एक गिलास और खिलौना गेंद थे।

प्र. भ्रूण हत्या पर कवि का विचार क्या है?

उ. बच्ची को भ्रूण में ही हत्या की जाती है। स्त्री को गर्भ धारण का अधिकार पुरुष की इच्छा पर चलता है नहीं तो गर्भ में ही बच्ची कठार का शिकार बनेगा।

प्र. इस कविता में चित्रित समस्या किसकी है ?

उ. नारी की

# शोक गीत

## कवि परिचय

समकालीन कविता के अंदर आनेवाली एक प्रसिद्ध कवयित्री है- कात्यायनी । इनका जन्म उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में हुआ । साहित्य से जुडी इस कवयित्री ने संपादन का कार्य भी किया है । ये मुख्यरूप से नारी विमर्शी कविताएँ लिखती है । उनकी कविताओं में जीती जागती संधर्ष करती प्रसिद्ध रचनाएँ हैं - सात भाइयों के बीच चम्पा, इस पौरुषपूर्ण समय में, जादू नहीं कविता आदि है ।

## शब्द और अर्थ

यूँ ही- ऐसा ही, गुजार दी- बिता दी, आँखें के तारे - सबसे प्रिय, दुलारे - प्रिय, जुटाया -जमा किया, जुलूस -procession ,पर्चा - नोटीस, विलक्षण- विशेषतायुक्त, कारगुजारी- कर्तव्यनिष्ठा, गणमान्य- noted

## कविता का सारांश

एक साधारण मनुष्य के समान मैंने प्यार किया । राशन और सभी चीजें मैंने खरीद ली । एक प्रतिबद्ध व्यक्ति की तरह मैंने ये सब कुछ किया । महंगाई के विरुद्ध जूलूस में भाग लिया, हडताल में सजीव थ । अब तक एक निजी कमरा मेरे लिए नहीं है ।

एक अच्छी कविता इसलिए मैं नहीं लिख पायी कि उस समय मैं दीवार पर नारे लिख रहा था । अंत तक एक आम आदमी की तरह जिया ।ऐसा में जीवन में सफल न बन पायी । मेरे सारे प्रयास मानव की सेवा के लिए थे । इसलिए मैं एक महान नहीं बन सकी । मेरी मृत्यु के बाद एक शोक गीत रचा नहीं गया । मेरी इस कठिन जीवन कहानी का सुखांत ऐसा ही हो गया ।

## विशेषताएँ

यह कविता असल में एक आम आदमी के जीवन की असफलता को व्यक्त करती है । आम आदमी कभी भी इतिहास में नहीं प्रकट होता है । इतिहास उन लोगों का रचा जाता है वे समाज के निर्माण में कभी भाग नहीं लेते हैं । आम आदमी इसलिए नामी नहीं बनता है कि वह हमेशा कर्मरत है । वह महंगाई, कालाबाजारी, भ्रष्टाचार के विरुद्द निकाले जोनेवाले जुलूस में भाग लेते हैं । दीवार पर नारे लिखते हैं । हडताल के नोटीस लिखते हैं और हडताल में भाग लेते हैं । उनकी जिन्दगी पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया, न कवि ने , न इतिहासकार ने , न राजनैलिक नेताओं ने । इसलिए उनका शोकगीत लिखा नहीं गया जब वे मर गये । सर्वथा उनकी उपेक्षा की गई ।

## प्रश्न और उत्तर

प्रश्न. शोकगीत किसकी कविता है ?

उत्तर. कात्यायनी

प्र. रचना करने के बदले वे क्या कर रही थी ?

उ.जनता की सेवा कर रही थी।

प्र.किसका जीवन उपेक्षित  होता है ?

उ. आम आदमी का

प्र. शोक गीत कविता का आशय क्या है ?

उ.वास्तव में आम आदमी से देश का इतिहास बनता है। उनके अमूल्य समय जनता और देश के लिए व्यतीत करते हैं। लेकिन उनकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता है। वे जीवन में असफल रह जाते हैं। उनका कोई शोक गीत नहीं लिखा जाता है। उनका कठिन जीवन कथा उनकी मृत्यु के साथ सुखांत हो जाती है।